सुख और प्रगति का आधार

आदर्श परिवार

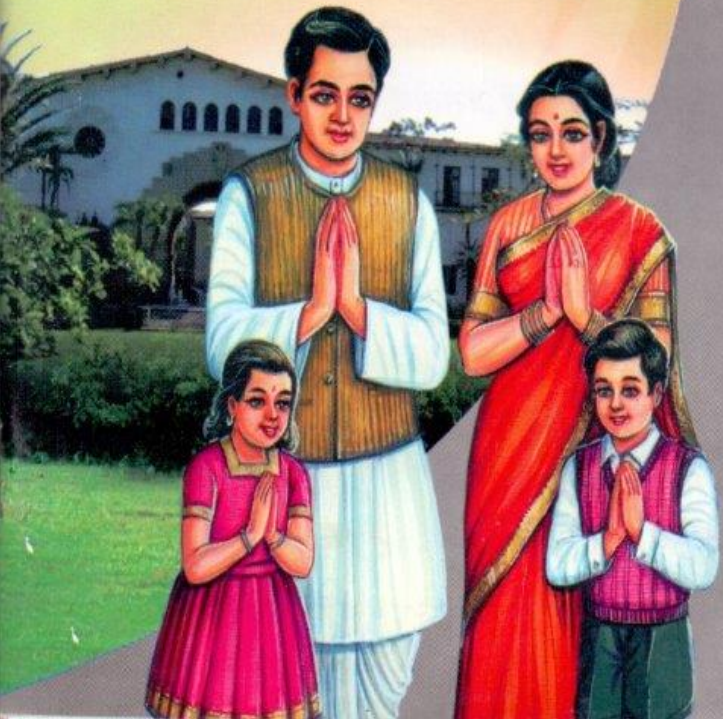

सुख और प्रगति का आधार आदर्श परिवार

लेखक

ब्रह्मवर्चस्

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

संस्करण सन् २०१३ मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूमिका

पारिवारिक जीवनक्रम तप और त्याग से भरा हुआ है। गृहस्थी के निर्वाह हेतु किया जाने वाला प्रयत्न किसी तितीक्षा से कम नहीं। परिवार का भार वहन करना, सदस्यों की सहकारितापूर्वक सुविधा के साधन जुटाना एक दुस्तर तपस्या है। उससे भी अधिक दुस्तर जो तपोवनों में बैठकर की जाती है। इस व्यवस्था में ही व्यक्ति अपनी अनेक प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना सीखता है। माँ-बाप स्वयं अपना पेट काटकर भी बच्चों को पढ़ाते हैं, छोटों को आगे बढ़ाते हैं। इसी खदान से सुसंस्कारी नागरिक निकलते हैं एवं इस व्यवस्था से ही जन्म लेती है—भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर-आतिथ्य धर्म।

यह एक विडंबना ही है कि बढ़ती आधुनिकता की व शहरीकरण की आसुरी लीला ने इस व्यवस्था को हानि पहुँचाने का कुछ सीमा तक प्रयास किया है। यही कारण है कि अब यह संस्था विशृंखलित होने लगी है। यह आलोक जन-जन तक पहुँचाना जरूरी है कि सहयोग-सहकार भरी परिवार व्यवस्था ही सुख-शांति से युक्त समाज का मूल आधार है।

यह पुस्तक सभी परिवारों में पहुँचे और सभी सदस्य इसका स्वाध्याय कर ऋषियों के चिंतन से मार्गदर्शन प्राप्तकर अपने परिवार को सुख और प्रगति का आधार बनाएँ।

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण—एक जीवन साधना

कौशल को निखारने के लिए कार्यक्षेत्र चाहिए। वैज्ञानिकों को प्रयोगशाला की, पहलवानों को व्यायामशाला की, डॉक्टरों को अस्पतालों की, अध्यापकों को पाठशाला की, शिल्पी को कारखाने की आवश्यकता पड़ती है। साधना का उद्देश्य है—आत्मपरिष्कार। अध्यात्म-साधना एवं जीवन-साधना का अभ्यास कहाँ किया जाए, इसके लिए दो स्थानों की आवश्यकता है, एक पूजा कक्ष, दूसरा प्रयोग क्षेत्र। प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से परिवार ही सर्वसुलभ है। पूजा-प्रार्थना से अंतरंग और स्वाध्याय-सत्संग से बहिरंग सत्प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। उन्हें कार्यक्रम में परिणत करने और अभ्यास में उतारने की भी आवश्यकता है। उपासना के बीजारोपण को खाद-पानी न मिलने से उसके सूखने और मुरझाने की ही आशंका बनी रहेगी।

परिवार की प्रयोगशाला में अपने निज के तथा समस्त प्रियजनों के गुण, कर्म, स्वभाव परिष्कृत करने का अभ्यास क्रम आरंभ किया जाए, तो उससे दोहरा लाभ है, भौतिक भी और आध्यात्मिक भी। भौतिक इस अर्थ में कि समस्त परिजनों को अपने व्यक्तित्व को सुविकसित करने के रूप में एक महान उपलब्धि का लाभ मिलता है। यह उपलब्धि इतनी बड़ी है कि उसे कुबेर की संपदा से भी बढ़कर माना जा सकता है। उस परिष्कृत वातावरण में रहने वाले सभी लोग सामान्य परिस्थितियाँ रहने पर भी असामान्य प्रसन्नता अनुभव करते हैं और हँसते-हँसाते प्रगति के उच्च शिखर तक जा पहुँचते हैं। **तपोवनों में घर बनाने की अपेक्षा घरों को तपोवन बनाया जाए।** सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन की साधना जितना सरलतापूर्वक घर-परिवार में हो सकती है, उतनी अन्यत्र नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार की प्रारंभिक आवश्यकता तो रोटी, कपड़ा और मकान की होती है। इसके बाद शिक्षा, चिकित्सा, आतिथ्य, रीति-रिवाजों के निर्वाह और आपत्तिकालीन स्थिति का सामना कर सकने वाली सामर्थ्य भी रखनी होती है। यदि जीवनयापन के लिए आवश्यक सामान्य ज्ञान और लोक व्यवहार का अनुभव हो, तो मनुष्य को जितनी बुद्धि मिली है और कलाइयों में जो क्षमता है, वह इसके लिए पर्याप्त है कि किसी सामान्य परिवार का गुजारा किसी प्रकार हँसी-खुशी के साथ होता चला जाए।

कठिनाई तब आती है, जब परिवार के सदस्यों में स्नेह-सौजन्य का, सद्भाव-सहयोग का अभाव रहता है। एक-दूसरे में रुचि नहीं लेते, अपने-अपने मतलब में चौकस रहते हैं, अनुशासन नहीं मानते और परस्पर मनोमालिन्य रखकर समय-कुसमय लड़ते-झगड़ते रहते हैं। जहाँ यह स्थिति होगी, वहाँ अर्थ साधन रहते हुए भी परिवार एक ऐसे कैदखाने की स्थिति में होगा, जहाँ विवशतापूर्वक समय काटना पड़ता है। ऐसी स्थिति में परिवारों में न घनिष्ठता रहती है, न आत्मीयता। ऐसी निरानंद स्थिति में दिन तो कटते रहते हैं, पर वह उपलब्धियाँ जो इस पवित्र संस्था के सदस्यों को मिल सकती थी, प्राय: नहीं मिल पातीं। आज के अधिकांश परिवारों की स्थिति ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण बनी हुई है।

छोटे-छोटे परिवारों की अपेक्षा बड़े परिवार बनाने की संयुक्त परिवार प्रथा लाभप्रद है, किंतु उनकी उपयोगिता इसी शर्त पर है कि उसमें परस्पर सघन सद्भाव और परिपूर्ण सहयोग का वातावरण हो। यदि द्वेष-दुर्भाव की, अवज्ञा और उपेक्षा की, आपाधापी की दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही हों, तो घर को नरक बनाने की अपेक्षा यही अच्छा है कि लोग अपना-अपना परिवार लेकर अलग हो जाएँ। सद्भाव की स्थिति में संयुक्त परिवार का लाभ है और दुर्भाव पनपने की स्थिति में उसका बिखर जाना ही श्रेयस्कर है। बड़े-बूढ़ों को एक पक्ष का अनावश्यक आग्रह नहीं करना चाहिए और स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के अनुरूप संयुक्त परिवार को बनाए रखने की तरह ही उसे शांति सद्भावपूर्वक अलग करने में भी सहायता करनी चाहिए।

परिवार संस्था की सफलता उसकी भावनात्मक स्थिति और आदर्शवादी आचार संहिता पर टिकी हुई है। जब तक ये आधार बने रहेंगे, तब तक अभावग्रस्त घर-परिवारों में भी स्थिति ऐसी सुखद बनी रहेगी, जिन पर स्वर्ग न्यौछावर किया जा सके। शरीर की भूख रोटी, कपड़ा और मकान, अन्न, जल एवं हवा तक ही सीमित है, पर आत्मा की भूख स्नेह, सम्मान और सहयोग की परिस्थितियाँ मिलने पर ही बुझती है। बड़े छोटों का अधिक ध्यान रखें, तो वे बिगड़ने न पाएँगे। घर में स्वस्थ परंपराएँ डाली जाएँ। हर कोई श्रमनिष्ठ बने। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी परिश्रमरत रहें। समय कोई बरबाद न करे। बड़ों का सम्मान छोटों को करना चाहिए, पर बड़ों को निठल्ले बैठे रहना और बात-बात पर हुक्म चलाकर छोटों का समय नष्ट करते रहना, अपना अधिकार नहीं मान लेना चाहिए। छोटों का कर्त्तव्य है कि बड़ों का सम्मान करें, पर बड़ों को भी इस दृष्टि से छोटों को अपने पीछे नहीं, आगे ही रखना चाहिए। बड़ों को संतुष्ट रखने के लिए उनका सम्मान करना, शिष्टाचार बरतना, आदरणीय संबोधन करना, नित्य प्रणाम करना, उनके शारीरिक कामों में सहयोग देना, कोई नया काम करते समय उनका आशीर्वाद लेना, उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना छोटों का कर्त्तव्य है। कई बार उनके विचार अनुपयुक्त, असामयिक एवं अवास्तविक होते हैं। ऐसे आदेश थोपते हैं जो मानने योग्य नहीं होते। कई बार वे घूँघट, छुआछूत, दहेज, धूमधाम में अपव्यय जैसी विकृत परंपराओं से चिपटे रहने का आग्रह करने लगते हैं। कई बार समाज-सेवा जैसे श्रेष्ठ कार्यों में अड़ंगा डालते हैं तथा स्वार्थवश केवल अपने काम-से-काम की सीख देने लगते हैं। इसलिए उचित-अनुचित की बात विवेक की कसौटी पर परखने के बाद ही किसी आज्ञा का पालन करना चाहिए। अनुचित आज्ञा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की उपेक्षा की जा सकती है। हाँ उस अवज्ञा में भी नम्रता बनाए रखनी चाहिए।

एक-दूसरे का सहयोग करना परिवार की स्वस्थ परंपरा होनी चाहिए। बीमारी में सब सबकी पूछताछ करें और देखभाल, चिकित्सा, परिचर्या, सहानुभूति व्यक्त करने के लिए तत्परता बरतें। बड़े बच्चे छोटों को पढ़ाया करें। बड़े-बूढ़े फालतू न बैठें, वरन छोटों को कहानियाँ सुनाने से लेकर उन्हें टहलाने, हँसाने, खेल-खिलाने, गृह-उद्योग सिखाने, प्रश्नोत्तर से ज्ञानवृद्धि करने तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार पारिवारिक कार्यों में हाथ बटाने के लिए तत्पर रहें। निरर्थक समय गँवाते रहने की सुविधा को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाएँ। मिलजुलकर काम करने की परंपरा पड़े। भोजन बनाने, सफाई रखने जैसे कार्यों का बोझ एक पर न डालकर उसमें अन्य लोग भी सहकार करें, तो उनकी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया बहुत ही अच्छी होगी।

इन सिद्धांतों के अनुरूप हमें अपने व्यक्तित्व ढालने चाहिए और परिवार में तदनुरूप परंपराएँ प्रचलित करनी चाहिए। ऐसे ही वातावरण में पल कर बच्चे सुसंस्कारी बनते हैं। अगली पीढ़ी को यदि उच्च शिक्षा दिला सकने की, उनके लिए संपत्ति छोड़ मरने की अपनी स्थिति न हो तो हर्ज नहीं, यदि उसे सद्गुणी, सुसंस्कारी बना दिया गया है, तो निश्चिंत रहना चाहिए कि वे हर परिस्थिति में सुखी रह सकेंगे। ◻

गृहस्थ धर्म अन्य सभी धर्मों से अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। महर्षि व्यास के शब्दों में "गृहस्थ्येव हि धर्माणां सर्वेषां मूलमुच्यते" गृहस्थाश्रम ही सर्व धर्मों का आधार है। "धन्यो गृहस्थाश्रमः" चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम धन्य है। जिस तरह समस्त प्राणी माता का आश्रय पाकर जीवित रहते हैं, उसी तरह सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर आधारित हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण से अनेक समस्याओं का समाधान

परिवार में सुसंस्कारिता का वातावरण बनाना प्रत्येक विचारशील, जागरूक और विवेकवान व्यक्ति का कर्त्तव्य है। इस संगठन में रहने और उसका लाभ उठाने का ही दृष्टिकोण यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना ले तो परिवार संस्था का कोई महत्व नहीं रह जाता। यदि एक साथ रहने का नाम ही परिवार है तो लोग धर्मशालाओं, होटलों और रेल-मोटरों में भी एक साथ रहते हैं। उतने मात्र से ही इन स्थानों पर रहने वाले लोग परिवार के सदस्य नहीं बन जाते। परिवार एक साथ रहने वाले व्यक्तियों का नाम नहीं है। उसमें रहने वाले सदस्य एक दूसरे के प्रति घनिष्ठ आत्मीयता के सूत्र में बँधे रहते हैं। साथ रहने, एक चौके में खाने और एक दूसरे से बोल-चाल, बात-चीत, प्रेम-व्यवहार से संबद्ध रहने के अतिरिक्त भी स्वजन आपस में एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों से बँधे रहते हैं। उन कर्तव्यों की पूर्ति करते चलना परिवार में रहने की, परिवारीजन कहलाने की अनिवार्य शर्त है। नासमझ, अबोध और छोटे बच्चों की अपेक्षा कर्त्तव्य पालन की आवश्यकता, अनिवार्यता परिवार के बड़े सदस्यों के लिए अधिक है। छोटे बच्चों को तो कर्त्तव्य और दायित्वों की भाषा ही नहीं समझ पड़ती, फिर वे उन्हें पूरा कहाँ से कर सकेंगे? उन्हें कर्त्तव्य और दायित्व समझाना आगे की बात है। पहले तो यह आवश्यक है कि बड़े लोग स्वयं कर्त्तव्यपरायण तथा परिवार के प्रति उत्तरदायी बनें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह उत्तरदायित्व परिवार के लोगों को संस्कारवान बनाने, उन्हें आदर्श और उत्कृष्ट व्यक्तित्व संपन्न बनाने के लिए किए गए जागरूक प्रयासों के रूप में ही पूरा किया जा सकता है। इन प्रयासों को कुशलता और तत्परतापूर्वक संपन्न किया जाए तो न केवल परिवार उत्कृष्ट व्यक्तित्वों को उत्पन्न करने में समर्थ हो सकेगा, वरन उन प्रयासों के द्वारा अगणित मानवीय समस्याओं का समाधान भी परिवार की परिधि में रहकर ही संभव हो सकता है। सामाजिक कुरीतियाँ और समस्याएँ कोई आसमान से नहीं टपकतीं, वे समाज की इकाई व्यक्तियों की प्रवृत्ति से ही जन्मती हैं। व्यक्ति यदि असंस्कृत, अदूरदर्शी और विवेकवान होंगे, तो उनकी प्रवृत्तियाँ, गतिविधियाँ और क्रियाकलाप भी उसी स्तर के होंगे। व्यक्तियों की गतिविधियाँ और उनके क्रियाकलाप ही कई तरह की सामाजिक समस्याएँ खड़ी करते हैं। यदि उनके दृष्टिकोण और रीति-नीति में कोई परिष्कार किया जाए, तो उन समस्याओं का जड़-मूल से उच्छेदन किया जा सकता है।

(१) अशिक्षा की समस्या—यद्यपि सभी समस्याएँ व्यक्तियों के अपने दृष्टिकोण रीति-नीतियों और क्रियाकलापों से ही उत्पन्न होती हैं, फिर भी कुछ का स्वरूप सीधे उनसे संबंधित नहीं होता। उदाहरण के लिए अशिक्षा को ही लें। प्रत्यक्षत: इसका कारण परिस्थितियाँ और साधनों का अभाव लगता है, परंतु वास्तव में इसका कारण रुचि का अभाव और शिक्षा का महत्त्व न समझना है। कारण जो भी हो, अशिक्षा अपने देश की एक बहुत बड़ी समस्या है, किंतु इतनी बड़ी समस्या का समाधान निरक्षरता का उन्मूलन घर-पड़ौस के शिक्षित लोग ही थोड़ा-थोड़ा समय देकर सहज ही कर सकते हैं, जबकि सरकारी तंत्र देश की तीन-चौथाई जनता को साक्षर बनाने के लिए तंत्र खड़ा करने में प्राय: असफल ही रहेगा।

(२) गरीबी की समस्या—गरीबी उन्मूलन में कुटीर-उद्योगों को प्रथम उपाय माना जा सकता है। यह प्रचलन ऊपर से नहीं थोपा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकेगा। घर के लोग आवश्यकता अनुभव करेंगे, तो उसके साधन उसी प्रकार जुटा लेंगे जैसे विवाह-शादियों में खरच करने के लिए पैसा कहीं से भी किसी भी प्रकार जुटा लेते हैं।

(३) स्वास्थ्य की समस्या—स्वास्थ्य को बनाने और बिगाड़ने में भोजन संबंधी ढर्रे, स्वच्छता तथा दिनचर्या की प्रमुख भूमिका रहती है, उसे सुधारने में ही आरोग्य का संरक्षण हो सकेगा, गली-गली अस्पताल बनाने और घर-घर डॉक्टर पहुँचाने से भी जो कार्य नहीं हो सकता, वह आहार-विहार संबंधी पारिवारिक ढर्रा बदलने से हो सकता है। **परिवारों में चौका-क्रांति एक अनिवार्य आवश्यकता है।**

(४) जनसंख्या वृद्धि की समस्या—जनसंख्या वृद्धि की समस्या अत्यधिक विकट है। यह राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। परिवार के हर सदस्य की इस संदर्भ में जागरूकता रहे और अति प्रजनन को अशुभ माना जाने लगे, तो यह कार्य सहज ही हो सकता है, जो सरकारी महकमे की दौड़-धूप नहीं कर पा रही है।

(५) चरित्र निर्माण की समस्या—चरित्र गठन और व्यक्तित्व-निर्माण का कार्य अत्यधिक महत्त्व का काम है। समर्थता, समृद्धि और प्रगति के सभी प्रयोजन इसी रथ चक्र के आधार पर गतिशील हो सकते हैं, यह कठिन कार्य परिवार संस्था के अतिरिक्त और किसी के बलबूते का नहीं है। स्कूलों में कुछ भी क्यों न पढ़ाया जाता रहे, घर का वातावरण ही व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव को गढ़ने-ढालने में सफल होगा। जो कार्य नीति, सदाचार और धर्म अध्यात्म का विशालकाय तंत्र चिरकाल से धूम-धाम और ऊहापोह के सहारे भी कर नहीं पाया, उसे परिवारों का सुधरा हुआ वातावरण देखते-देखते संपन्न कर सकता है।

(६) नागरिकता की शिक्षा—नागरिकता और सामाजिकता की कारगर शिक्षा देना और शालीनता को स्वभाव का अंग बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देना, न प्रवचनों के हाथ में है और न साहित्य इस दिशा में बहुत आगे तक जा सकता है। इन प्रचार तंत्रों से दिग्दर्शनभर हो सकता है। सत्प्रवृत्तियों को स्वभाव का अंग बनाना उपचारों से नहीं, अंतरंग के मर्मस्थल को प्रभावित करने वाली एवं दैनिक जीवन में कार्यान्वित होने वाली परिपाटी से ही संभव हो सकता है। यह महान कार्य यदि कभी कोई कर सकता है, तो वह एक ही तंत्र होगा—परिवार का परिष्कृत वातावरण।

(७) कुरीति उन्मूलन की समस्या—सामाजिक कुरीतियाँ, अनुपयुक्त प्रथा-परंपराएँ, मूढ़-मान्यताएँ और रूढ़ियाँ, कितनी कष्टकर और कितनी खरचीली विभीषिकाएँ रचती रहती हैं, उसे हम सब आए दिन अनुभव करते हैं। घर-परिवार का भीतरी वातावरण इतना दुराग्रह अपनाए बैठा होता है कि बुद्धिमानी एक कोने में बैठी रहती है और रूढ़ियाँ क्रियान्वित होती रहती हैं। सुधार अभीष्ट हों, तो पत्ते तोड़ने से नहीं जड़ काटने से ही काम चलेगा।

(८) नारी जागरण की समस्या—नारी उत्थान का कार्य भी पारिवारिक वातावरण में परिवर्तन करने से ही संभव हो सकता है। पुत्र और पुत्री में भेद, पर्दा प्रथा, शिक्षा की उपेक्षा, विवाहों की जल्दी, प्रगति प्रयासों का विरोध, असहयोग, अस्त-व्यस्त ढर्रे में पूरा समय नष्ट होते रहना और प्रगति प्रयासों के लिए समय न मिलना जैसे अवरोध ही नारी की प्रगति में बाधक और अवनति के निमित्त हैं। इन अनाचारों का परिपोषण एक व्यक्ति नहीं, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पूरा पारिवारिक वातावरण ही करता है। नारी उत्थान की समस्या का हल, यदि वस्तुतः करना हो तो उसके लिए प्रचलित पारिवारिक ढर्रे को बदलना अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

(९) गोरक्षा की समस्या—गोरक्षा के लिए कितने ही आंदोलन चलते हैं, पर अंतिम समाधान एक ही है कि मात्र गाय का दूध ही प्रयुक्त किया जाए। हर परिवार की यही माँग हो तो गो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन का व्यवसाय देश का प्रमुख उद्योग बन जाएगा और उससे न केवल धर्म भावना एवं स्वास्थ्य रक्षा का सवाल हल होगा, वरन उपयोगी बैल मिलने से लेकर असंख्यों की बेकारी दूर होने का एक नया मार्ग भी मिलेगा।

(१०) लोकसेवियों की पूर्ति—प्राचीनकाल में हर घर के पीछे, एक व्यक्ति लोकसेवा के लिए समर्पित होता था। पारिवारिक संकीर्णता का दबाव इन दिनों इतना अधिक है कि कोई परमार्थ परायण होने की बात सोचे या कदम उठाए, तो उसे परिवार से लेकर मित्र-संबंधियों तक के भारी विरोध का सामना करना पड़ता है। वानप्रस्थ और संन्यास की आवश्यकता घर के लोग अनुभव करने लगें, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति और समाज का कायाकल्प प्रस्तुत करने वाला सतयुग स्वर्ग से उतर कर धरती पर आने के लिए तैयार हो गया।

(११) दुर्व्यसन-दुष्प्रवृत्ति निवारण—कितने ही दुर्व्यसन और दुर्गुण मनुष्य समाज को खोखला करते हैं। सिगरेट, शराब आदि का प्रचलन परिवार में विरोधी वातावरण न रहने से ही पनपता है। सिख परिवार में तंबाकू और जैन परिवार में माँसाहार का प्रचलन प्राय: नहीं ही पाया जाता। इसमें व्यक्ति विशेष को श्रेय नहीं, वरन पूरे परिवार का दबाव काम करता है।

अनैतिकताएँ और अपराधी दुष्प्रवृत्तियाँ रोकने के लिए पुलिस, कचहरी, जेल, कानून आदि का खर्चीला ढाँचा चल रहा है, इतने पर भी पतनोन्मुख प्रवाह में कोई कमी आती नहीं दीखती। यदि परिवार में अनीति को प्रश्रय न देने का प्रचलन हो, उसको समर्थन-सहयोग न मिले, तो अधिकांश दुष्प्रवृत्तियाँ पनपने का अवसर ही नहीं पा सकतीं। व्यक्तिगत दोष-दुर्गुणों से लेकर सामाजिक कुरीतियों और अनैतिक, अवांछनीय, भ्रष्ट प्रवृत्तियों तक जितनी भी समस्याएँ वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में व्याप्त हैं, उनका हल परिवार में खोजा जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१२)सहकारिता की समस्या—मिलजुलकर रहने, योग्यतानुसार कमाने, आवश्यकतानुसार खरच करने की आदर्शवादिता परिवार का मेरुदंड है। अध्यात्म की दृष्टि से अधिक लोगों का आत्मीयता के बंधनों में बँधना, सुख-दुःख को मिल-बाँटकर वहन करना, अधिकार को गौण और कर्त्तव्य को प्रमुख मानकर चलना पारिवारिकता है। इसे सहकारी जीवन पद्धति कह सकते हैं।

मानवी प्रगति में बुद्धि की प्रधानता को कारण समझा जाता है, पर वस्तुतः महिमा सहकारिता की है। कुटुंब बनाकर रहने और समाज व्यवस्था अपनाने से ही उसने इस स्तर तक पहुँचने में सफलता पाई है, जिससे वह सृष्टि का मुकुटमणि समझा जाता है। भौतिक-आत्मिक प्रगति का सारा रहस्य मिलजुलकर रहने की पद्धति में सन्निहित है। इसी सत्प्रवृत्ति को जीवनयापन के हर क्षेत्र में विकसित करना पारिवारिकता है। इसी का विकसित रूप समाजवाद एवं साम्यवाद है। अध्यात्म दर्शन भी इसी आस्था पर आधारित है। "वसुधैव कुटुंबकम्" का सिद्धांत समस्त मानव समाज को प्राणिमात्र की आत्मीयता के सूत्र में बाँधता है और संयुक्त रूप से प्रगति करने तथा मिलबाँटकर खाने की प्रेरणा देता है।

उदार दृष्टि से विचार करने पर तो यह पूरा विश्व ही अपना परिवार दिखाई देने लगेगा। स्वभावतः परिजनों को प्रगतिशील, समुन्नत, यशस्वी, समृद्ध एवं सुसंस्कृत होने की आकांक्षा रहती है। यह शुभेच्छाएँ मात्र कल्पना करने या आशीर्वाद देने से पूरी नहीं हो जातीं। इन्हें फलित करने के लिए उस वातावरण को समर्थ बनाना पड़ता है, जिसमें पलकर किसी अनगढ़ को सुगढ़, अविकसित को समुन्नत बनने का अवसर मिलता है। जलवायु की अनुकूलता में वृक्ष वनस्पतियाँ विकसित और फलित होती हैं। प्रतिकूलता होने पर बहुमूल्य पौधे भी सूखते, दम तोड़ते देखे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाते हैं। यही बात प्राणियों के संबंध में भी है। समर्थ वर्ग के जीव-जंतु भी अनुपयुक्त परिस्थितियों में दुर्बल रुग्ण रहते और अस्तित्व गँवाने लगते हैं। मनुष्य की आत्मसत्ता महान अवश्य है, किंतु उसको भी साँस लेनी पड़ती है। घुटन भरे घेरे में रहकर उसे अपनी स्वाभाविक चेतना से हाथ धोना पड़ता है। विष खाने से ही नहीं, विषाक्त गैस से भी मृत्यु होती है। व्यक्ति के निजी दोष-दुर्गुण प्रगति पथ में जितना अवरोध उत्पन्न करते हैं, उससे कम नहीं कुछ अधिक ही बाधा उस वातावरण के कारण उत्पन्न होती है, जो परिवार में कुसंस्कारी परिस्थितियों के कारण बना होता है।

निर्जीव निर्माण सरल है, सजीवों का उत्कर्ष कठिन है। वस्तुएँ जहाँ-की-तहाँ रखी रहती हैं। अपने मन से उलट-पुलट नहीं करतीं, पर सजीव प्राणी तो हर घड़ी कुसंस्कारिता का परिचय देने और नई-नई समस्याएँ उत्पन्न करने से नहीं चूकते। ऐसी दशा में प्राणियों का, विशेषतया मनुष्यों का भावनात्मक निर्माण कितना कठिन हो सकता है, इसे कल्पना से नहीं, अनुभव से ही जाना जा सकता है। शरीर-पोषण तो सरल है, पर बौद्धिक एवं भावनात्मक निर्माण करने के लिए असाधारण दूरदर्शिता और तत्परता अपनानी पड़ती है।

परिवार निर्माण का प्रत्यक्ष पक्ष इतना ही है कि उस परिवार में रहने वाले प्रत्येक परिजन का वर्तमान सुखद और भविष्य उज्ज्वल बनता है। निर्माताओं को इसके बदले में आत्मसंतोष, गर्व-गौरव, श्रद्धा-सम्मान एवं यश-श्रेय प्राप्त होता है। फले-फूले उद्यान को लगाने-सजाने वाला माली, सामान्य श्रमिकों की तुलना में कुछ अधिक ही श्रेय और लाभ कमाता है। परिवार निर्माण में तत्पर मनुष्यों की उपलब्धियाँ किसी कुशल माली, भवन निर्माता, सफल उद्योगपति, सरकस के रिंग मास्टर से अधिक ही आँकी जाती है, कम नहीं। ◘

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुधार का प्रारंभ स्वयं से करें

परिवार निर्माण में प्रधानतया सद्विचारों और सद्गुणों का प्रयोग करना पड़ता है। यह प्रशिक्षण मात्र वाणी से नहीं हो सकता, शिक्षक को अनिवार्यतः अपना उदाहरण प्रस्तुत करना होता है। गीली मिट्टी से सुंदर खिलौने ढलते जिन्होंने देखे हैं, वे जानते हैं कि यह चमत्कार वस्तुतः उस साँचे का है जिसमें खिलौने की छवि पहले से ही साफ सुथरे ढंग से उभरी हुई है। इसमें कमी रहेगी, तो जो बनेगा वह भी काना-कुबड़ा ही होगा। व्यक्ति-निर्माण में कभी भी मात्र बौद्धिक प्रशिक्षण कारगर सिद्ध नहीं हुआ है। प्रभावी प्रवचनों और प्रदर्शनों से यदि व्यक्तित्वों को ढालना संभव रहा होता, तो यह काम कब का हो गया होता और इसे समर्थ लोगों ने कब का कर लिया होता। ज्योति-से-ज्योति जलती है और तेजस्वी व्यक्तियों के प्रभाव से नए व्यक्तित्व ढलते बदलते हैं। अस्तु परिवार के जिन मूर्धन्य लोगों को अपने क्षेत्र में नव सृजन करना है, उन्हें वह सब कुछ पहले अपने स्वभाव में उतारना होगा, जो उन्हें परिजनों से कराना है। समझाने भर से काम चल जाता, तो कितना अच्छा होता, तब समझ की तूती बोलती और चरित्रनिष्ठा के द्वार खटखटाने की आवश्यकता न पड़ती, किंतु विवशता का क्या किया जाए? परिवार में उत्कृष्टता का वातावरण बनाना इस दृष्टि से थोड़ा कठिन भी है, पर उसकी तुलना में जो लाभ मिलता है, उसे देखते हुए कठिनाई अथवा परिश्रम रत्तीभर भी नहीं है।

उत्तराधिकारियों के लिए धन-वैभव छोड़ सकना उतना सुखद नहीं हो सकता, जितना उन्हें सुसंस्कारी बना देना। यह संपत्ति ऐसी है, जो उनको सदा गौरवान्वित रखेगी और पग-पग पर श्रेय-सहयोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लाभान्वित करेगी। सफलताएँ किसी भी क्षेत्र की क्यों न हों, उन्हें व्यक्तित्व संपन्न लोग ही प्राप्त करते हैं।

दूसरों की आदतें बदलने के लिए अपनी आदतें बदलनी होती हैं। दूसरों का स्वभाव सुधारने के लिए पहले अपना सुधार करना होता है। उपदेशों से जानकारीभर दी जा सकती है। व्यक्ति को सुधारना उन्हीं के लिए संभव होता है, जो अपने आपको आदर्श के रूप में विकसित कर सकते हैं। शिक्षा तो सहज ही सुनी जा सकती है, पर प्रेरणा तभी मिलती है, जब अनुकरण के लिए प्रभावशाली आदर्श सामने हो। ज्योतिवान दीपक ही दूसरे नयों को जलाता है। साँचे के अनुरूप ही खिलौने या पुर्जे ढलते हैं। दूसरे को कुछ सिखाना-बतानाभर हो तो बात दूसरी है, अन्यथा ढालने का लक्ष्य सामने हो तो सर्वप्रथम स्वयं ढलने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं।

परिवार को सुसंस्कारी बनाने के प्रयास में उसके लिए अग्रणी लोगों को सर्वप्रथम अपनी ही गढ़ाई करनी पड़ती है। इस संदर्भ में जो जितनी सफलता प्राप्त कर लेंगे, उन्हें परिवार निर्माण में उसी अनुपात में सफलता मिलेगी। जो गुण सहचरों में उत्पन्न करने हैं, वे सर्वप्रथम अपने में उत्पन्न करने होंगे। अनुकरण प्रिय मनुष्य प्राणी जो कुछ समझता है, उसमें तो शिक्षकों के परिश्रम का फल भी कहा जा सकता है, पर जो बनता है, उसमें प्राय: उन्हीं के चरित्रों का योगदान होता है, जो साथ रहते और प्रभावित करते हैं। कुसंग और सत्संग के परिणामों से सभी परिचित हैं। इनमें शिक्षण-परामर्श नहीं, वह प्रभाव काम करता है, जो साथी की भली-बुरी विशिष्टता के कारण उत्पन्न होता है। जो इस सत्य को समझेंगे और परिवार निर्माण के लिए वस्तुत: इच्छुक होंगे, उन्हें यह प्रयास आत्मनिर्माण से आरंभ करना होगा, ताकि ढलाई की जटिल प्रक्रिया को सरल एवं संभव बनाया जा सके।

□

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण से ही व्यक्ति और समाज का निर्माण संभव

परिवार निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से आत्मनिर्माण और समाज निर्माण के दोनों उद्देश्य अनायास ही पूरे होते चलते हैं। घर को तपोवन बनाने की बात कही जाती रही है। गृहस्थ को योग की संज्ञा दी गई है। पतिव्रत, पत्नीव्रत, पितृ-सेवा, शिशु-वात्सल्य, समता, सहकार की सत्प्रवृत्तियाँ यदि सघन सद्भावना की मन:स्थिति में संपन्न की जा सकें तो उसका महत्त्व योगाभ्यास एवं तप साधना से किसी प्रकार कम नहीं होता। इस प्रतिपादन में सहस्रों कथा-गाथाओं से इतिहास-पुराणों के पन्ने भरे पड़े हैं। कर्मयोग की जितनी उत्तम साधना गृहस्थ में हो सकती है, उतनी कदाचित ही अन्यत्र बन पड़े। इस प्रसंग में यह कहना भी अत्युक्तिपूर्ण नहीं है कि आत्मनिर्माण के लिए सरल और सार्थक साधना पद्धति परिवार निर्माण के रूप में ही प्रयुक्त हो सकती है।

परिवार निर्माण की प्रतिक्रिया समाज निर्माण के रूप में होने की बात समझने में किसी विचारशील को कोई कठिनाई नहीं हो सकती। जिन महामानवों ने विश्व इतिहास में महती भूमिकाएँ संपन्न की हैं, उनके व्यक्तित्व सुसंस्कृत पारिवारिक वातावरण में ही ढले थे। निजी प्रतिभा का मूल्य स्वल्प और प्रभावी वातावरण की क्षमता महान है। प्रतिभाएँ कुसंस्कारी वातावरण में ढलती हैं, तो वे दुष्ट-दुरात्मा बनकर अपना और दूसरों का अहित ही करती रहती हैं। यदि उन्हें सुसंस्कृत परिस्थितियों में पलने-परिपक्व होने का अवसर मिला होता, तो निश्चय ही स्थिति सर्वथा भिन्न होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियों ने जिन्हें डाकू बना दिया, यदि उन्हें दिशा और सहायता मिली होती, तो वह व्यक्ति किसी सेना का कुशल सेनापति अथवा साहसिक नेतृत्व कर सकने में पूर्णतया सफल सिद्ध हुआ होता। व्यक्ति की मौलिक प्रतिभा को कितना ही महत्त्व और श्रेय क्यों न दिया जाए, वातावरण के प्रभाव को झुठलाया नहीं जा सकता। कहना न होगा कि मनुष्य को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सबसे अधिक सामर्थ्य परिवार के वातावरण में ही होती है।

रस्सा और कुछ भी नहीं बिखरे हुए धागों का संयुक्त समुच्चय भर है। समाज और कुछ नहीं, परिवार में बसे हुए मनुष्यों का समुदाय मात्र है। व्यक्तियों का उत्पादन ही नहीं, परिपोषण और परिष्कार भी उसी में होता है। समाज जैसा भी कुछ है, पारिवारिक परंपराओं की देन है। समाज को जैसा भी कुछ बनाना है, वैसी परिस्थितियाँ परिवारों में उत्पन्न करनी होंगी।

किसी राष्ट्र की समृद्धि-सामर्थ्य, प्रतिभा एवं वरिष्ठता सरकारी दफ्तरों या अफसरों तक सीमित नहीं होती, वहाँ तो उसकी झाँकी मात्र मिलती है। छावनियों में रहने वाली सेना ही किसी राष्ट्र की शक्ति नहीं है, वास्तविक शौर्य, पराक्रम तो गली, मौहल्लों और घर-परिवारों में उगता और बढ़ता है। छावनियों में सेना उपजती नहीं, वह परिवारों से ही आती है। राष्ट्रीय समृद्धि के लिए सरकारी कोष की नाप-तोल करना अपर्याप्त है। समृद्धि तो परिवारों में संचित रहती है। सरकार तो उन पर टैक्स लगाकर निचोड़तीभर है। राष्ट्रीय चरित्र का मूल्यांकन अफसरों को देखकर नहीं, नागरिकों के स्तर से किया जाता है। संत, ऋषि, महापुरुष, सुधारक, प्रज्ञावान, मूर्धन्य, कलाकार आसमान से नहीं टपकते। उन्हें आवश्यक प्रकाश पारिवारिक वातावरण तथा संपर्क में आने वाले सृजन परिजनों से ही उपलब्ध होता है। अन्न कोठों में भरा तो रहता है, पर उसका उत्पादन खेतों में होता है और खेत का हर पौधा उस संपदा को बढ़ाने में समर्थ सहभागी की भूमिका निभाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज निर्माण के लिए कुछ भी किया या कहा जाता रहे। आंदोलन और प्रचार के लिए किसी भी प्रक्रिया को क्यों न अपनाया जाए। प्रचारतंत्र और सृजन संस्थान का कितना ही बड़ा ढाँचा खड़ा किया जाए, किंतु वास्तविकता की आधारशिला परिवार के प्रचलन में सुधारात्मक प्रवृत्तियों के समावेश से ही संभव हो सकेगी। जड़ को सींचे बिना पत्ते-पौधे और उद्यान को सुरम्य बनाने में अन्य उपाय आधे-अधूरे ही बने रहेंगे। वृक्षों को खुराक तो जड़ों से मिलती है। समाज का अक्षयवट अपना परिपोषण परिवारों से उनमें व्यवस्थित क्रम से रहने वाले व्यक्तियों से ही प्राप्त करता है। अस्तु, समाज निर्माण की, समाज सुधार की बात सोचने वालों को उस महान आरोपण के लिए परिवारों की क्यारियाँ ही उर्वरता संपन्न बनानी होंगी। इस तथ्य को जितनी जल्दी समझ लिया जाए, उतना ही उत्तम है।

□

गृहस्थ तप और त्याग का जीवन है। गृहस्थी के निर्वाह-पालन के लिए किए जाने वाला प्रयत्न किसी तप से कम नहीं है। कुटुंब का भार वहन करना, परिवार के सदस्यों के सुविधापूर्ण जीवन के साधन जुटाना, स्त्री, बच्चे, माता, पिता, अन्य परिजनों की सेवा करना बहुत कठिन तपस्या है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक संगठन टूटने न पाएँ

मनुष्य की प्रकृति बराबर स्वतंत्र रहने की होती है। स्वतंत्रता उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। व्यक्तिगत स्वतंत्र विचारधारा पर परिवार में किसी के द्वारा आक्षेप नहीं होना चाहिए, लेकिन यह ध्यान रखा जाना आवश्यक होगा कि उस विचारधारा से पारिवारिक शांति में कोई व्यवधान तो नहीं हो रहा है। उस विचारधारा से प्रभावित होकर कोई अपनी नैतिकता तो नहीं खो रहा है। वह विचारधारा सामाजिक जीवन को अस्त-व्यस्त तो नहीं कर रही है। यदि ऐसी विचारधारा है तब तो इसका विरोध और इसकी आलोचना उस व्यक्ति के समक्ष करना ही चाहिए। उसे उपयुक्त सुझावों से आकृष्ट कर सही रास्ता दिखलाना चाहिए। हाँ, यदि किसी परिवार में रूढ़िगत परंपरा का प्रचलन है जिसको मानकर चलने में किसी को आपत्ति है तो इसके लिए किसी को लाचार भी नहीं करना चाहिए। एक-दूसरे के प्रति हमारा फर्ज हो जाता है कि हम एक-दूसरे की रुचियों को अपने हृदय में स्थान दें।

परिवार संस्था एक शरीर है और उसका अस्तित्व तभी सुरक्षित है जबकि उसके अंग-अवयव एक-दूसरे के लिए काम करें, एक-दूसरे से सहयोग करें और परिवार के अस्तित्व में ही अपना अस्तित्व घुलाए-मिलाए रहें। यदि सभी के अंग-अवयव अपने आपको स्वतंत्र और अलग-अलग मानने लगें तथा अपने उपार्जन का लाभ स्वयं अकेले ही लेने की चेष्टा करने लगें, तो शरीर व्यवस्था लड़खड़ाएगी ही। हाथ कहने लगें कि मैं जो उपार्जन करता हूँ, जो भोजन उठाता हूँ, उसे मुँह में क्यों जाने दूँ? वह तो मेरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिश्रम है। मेरे परिश्रम का लाभ मुझे ही मिलना चाहिए। मुँह कहने लगे कि मैं जो कुछ खाता-चबाता हूँ, उसे अपने तक ही सीमित क्यों न रखूँ? पेट में क्यों जाने दूँ? पेट जो पचाता है उसका सत्व अपने तक ही सीमित रखे, दूसरे अंग-अवयवों को उनका हिस्सा न बाँटे। हृदय अपने पास आने वाले रक्त को संचित करने लगे और उसे शरीर के दूसरे अंगों में न जाने दे, यह सोचने लगे कि मैं अपना संचित कोष औरों को क्यों वितरित करूँ? तो शरीर की क्या स्थिति होगी? शरीर जीवित ही नहीं बचेगा और उसके साथ-साथ अपने को ही केंद्र मानकर व्यवहार करने वाले अंग-अवयव भी नष्ट होंगे। शरीर के अंग-अवयवों में कोई संकुचितता नहीं है और इसी कारण देह नगरी जीवित रहती है। परिवार इसलिए टूट रहे हैं कि उसका प्रत्येक सदस्य आत्मकेंद्रित होकर विचार करने लगा है तथा उसी के अनुसार व्यवहार करता है।

अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी जैसे समृद्धशाली देशों के तलाक संबंधी आँकड़े इस तथ्य का बोध कराते हैं कि वहाँ का पारिवारिक जीवन दिन-प्रतिदिन टूटता जा रहा है। यह तथ्य और भी चौंकाने वाले हैं कि इन देशों में जैसे-जैसे समृद्धि बढ़ी है, उसी अनुपात में तलाक की घटनाओं में भी अभिवृद्धि हुई है। स्पष्ट है कि दृष्टि बहिर्मुखी साधनों पर अत्यधिक केंद्रित हो जाने का यह दुष्परिणाम हैं। दांपत्य जीवन एवं परिवार को एक सूत्र में बाँधे रहने के आधार हैं—स्नेह, सद्भाव, सहकार, सेवा एवं त्याग की वे प्रवृत्तियाँ जिनके कारण अभावों में रहते हुए और कष्टमय जीवनयापन करते हुए भी कभी एक-दूसरे से अलग होना नहीं चाहते। यह आधार न हो तो एकांगी भौतिक समृद्धि दांपत्य जीवन को बाँधे नहीं रख सकती। इसका प्रमाण है पाश्चात्य जगत में बढ़ता हुआ पारिवारिक असंतोष और टूटता हुआ दांपत्य जीवन।

टूटते हुए परिवार का दुष्प्रभाव संबंधित व्यक्तियों पर ही नहीं, समाज के ऊपर भी असाधारण रूप से पड़ता है, परस्पर अविश्वास,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असंतोष की भावना बढ़ती है, परिवार के सदस्य अपने को असुरक्षित समझते हैं एवं बच्चों का भविष्य संकट में पड़ जाता है। बच्चों को मिलने वाले माता-पिता के स्नेह से वंचित रहना पड़ता है, उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि ऐसे बच्चे ही अधिकांशत: अपराधी बनते हैं तथा अवांछनीय गतिविधियों द्वारा समाज की भारी क्षति करते हैं। विलासता को प्रधान मानकर आरंभ होने वाले वर्तमान विवाहों की जो असफलता एवं दुर्गति दृष्टिगोचर हो रही है, उसमें सुधार होने के लिए कानूनी प्रतिबंध एवं सामाजिक अनुबंध काफी नहीं। इस समस्या का समाधान तो उस धर्म धारणा को अंतराल की गहराई में उतारने से ही संभव हो सकता है जिसे पतिव्रत धर्म, पत्नीव्रत धर्म कहते हैं।

□

परिवार में सद्ज्ञान की अभिवृद्धि की आवश्यकता पूरी की जानी चाहिए। परिजनों को कूप-मंडूक नहीं रहने देना चाहिए। जीवन की, समाज की समस्याओं से अपरिचित रहना ऐसी भूल हैं, जिसके कारण कभी-कभी ऐसी ठोकरें खानी पड़ती हैं, जो आदमी को चित्तपट्ट करके रख दें। अवकाश के समय में समाचारों एवं कथा-संस्मरणों के माध्यम से उपयोगी जानकारी बढ़ाने का कार्य हर सद्गृहस्थ को हाथ में लेना चाहिए। रूखे, नीरस और निर्देशात्मक उपदेशों को प्राय: व्यंग, उपहास एवं अवज्ञा में धकेल दिया जाता है। कथा-कहानी के माध्यम से घुमा-फिराकर शिक्षा दी जाए, तो उसमें मनोरंजन आकर्षण भी रहता है और परोक्ष रूप से दी गई शिक्षा का चित्त पर प्रभाव भी पड़ता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार को सुसंस्कृत बनाने के कुछ सूत्र

स्वर्ग और नरक कहीं अन्यत्र नहीं, मनुष्य जब चाहे अपने छोटे से घरोंदे में दोनों में से किसी का भी अवतरण कर सकता है। रामायण में ऐसे पारिवारिक आदर्श का उल्लेख मिलता है। अयोध्या के निवासियों का पारिवारिक जीवन आदर्शों से ओत-प्रोत था। यदि हमारे पारिवारिक जीवन में ऐसा उदात्त भाव पाया जाता, तो परिवार संस्था क्यों छिन्न-भिन्न दिखाई पड़ती। रामायणकाल में पारिवारिक जीवन में जिन आदर्शों का पालन किया गया है, उसे राष्ट्रीय जीवन की सांस्कृतिक धरोहर कहा जाए, तो कोई अत्युक्ति नहीं। यदि उन विभिन्न पक्षों को अपने जीवन का केंद्र-बिंदु मानकर चलें, तो परिवार में स्वर्गीय वातावरण का अवतरण कोई कठिन नहीं।

परिवार के सदस्यों के बीच घनिष्ठ आत्मीयता एवं स्नेह-सद्भाव के आधार पर परिवार को एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। जिस परिवार में संकीर्णता पनपती है, परिवार को विशृंखलित कर डालती है। अपने ही परिवार के सदस्यों में भेदभाव का होना एक ऐसी चिनगारी है जो भीतर-ही-भीतर जलाती रहती है। इन दिनों यह चिनगारी अधिकांश परिवारों में सुलगती देखी जा सकती है। आगे चलकर यही पारिवारिक विघटन का कारण बनती है।

पारिवारिक सदस्यों में जब तक समर्पण, त्याग, उत्सर्ग का भाव बना रहता है, तब तक उसकी सुदृढ़ एकता पर आँच नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आने पाती। परिवार में रहने वाला प्रत्येक सदस्य कर्त्तव्यों को प्रधान और अधिकारों को गौण माने, अपनी नहीं दूसरों की सुख-सुविधा को प्राथमिकता दे, तो आपस में मन-मुटाव तथा विक्षोभ की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। माता को त्याग की जीवंत प्रतिमा कहा जा सकता है। ऐसा त्याग भाव यदि कुछ अंश में भी परिवार के हर सदस्य में आ जाए, तो कलह-विग्रह की स्थिति उत्पन्न न हो।

उदारता, सहिष्णुता का समावेश दैनिक जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप में रहना चाहिए। प्रत्येक सदस्य यह ध्यान रखे कि हमारे व्यवहार से किसी का अहित न हो। जाने-अनजाने में ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग न हो, जो आपसी मन-मुटाव को जन्म दे। व्यवहार एवं वाणी में नम्रता, मधुरता, सौम्यता व शालीनता बनी रहे। परिवार में वाणी की मधुरता का यह प्रारंभिक अभ्यास आगे चलकर व्यक्ति के सामाजिक जीवन में भी बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। यह नम्रता केवल अपने से बड़ों के प्रति ही नहीं हो, छोटों का हृदय भी मधुर व्यवहार द्वारा ही जीता जा सकता है। बच्चों को भी प्यार के साथ सम्मान की आकांक्षा रहती है। इसके अभाव में या तो उनमें आत्महीनता का भाव पनपता है या वे उद्दंड-उच्छृंखल बन जाते हैं।

जहाँ भी चार-पाँच व्यक्तियों का संगठन हो, उनके स्वभाव, आदतों, विचारों में कुछ-न-कुछ भेद अवश्य पाया जाएगा। एक ही माँ-बाप की सगी संतानें एक जैसी नहीं होतीं, हाथ की पाँचों अंगुलियाँ बराबर कहाँ होती हैं, पर सबके सामंजस्य-सहकार से ही कोई काम हो पाता है। हम यह चाहें कि सभी व्यक्ति हमारे अनुरूप हो जाएँ, तो यह कदापि संभव नहीं। इसके लिए तो दोनों ही पक्षों को कुछ-न-कुछ उदारता बरतनी होगी। ठीक यही बात पारिवारिक सदस्यों के लिए भी लागू होती है। प्रत्येक सदस्य के आपसी सामंजस्य पर परिवार की एकता व संगठन निर्भर करते हैं। स्वभावगत भिन्नता के कारण नई बातें खड़ी हो सकती हैं, लेकिन यदि दूसरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के व्यवहार से होने वाली असुविधा को हँसते-हँसते टाल दिया जाए या नम्रतापूर्वक उस गलती को बता दिया जाए, तो आपसी मन-मुटाव तो दूर एक-दूसरे की गलतियों में भी सहज सुधार होता रह सकता है। जहाँ अपनी गलती हो, उसे तुरंत स्वीकार कर लेने में सामने वाले को कुछ कहने-सोचने का अवसर ही न मिलेगा। ये बातें लगती तो छोटी हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में इनका बड़ा महत्त्व है।

बड़ों के प्रति सम्मान तथा श्रद्धा, छोटों के प्रति स्नेह तथा प्यार की अभिव्यक्ति ही पारिवारिक सुख-शांति का मेरुदंड है। बच्चों को यह शिक्षा आरंभ से ही दी जानी चाहिए कि वे बड़ों का सदा आदर करें। शालीनता एवं नम्रता उनके संस्कारों में घोलने के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष हर प्रकार के संभव प्रयास किए जाने चाहिए। इसमें एक कड़ी और भी जोड़नी होगी कि परिवार में जो बड़े हैं, उन्हें बच्चों की भावनाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उनकी भी कुछ मनोवैज्ञानिक कठिनाइयाँ और समस्याएँ होती हैं, जिनकी उपेक्षा करने पर उनके भीतर कुंठा एवं निराशा की भावना पनपती है। ◻

परिवार संस्था सहजीवन के व्यावहारिक शिक्षण की प्रयोगशाला है। इसीलिए कुटुंब समाज संस्था की इकाई माना जाता है। प्रत्येक सदस्य अपनी-अपनी मर्यादाओं का पालन करने में अपनी प्रतिष्ठा, कल्याण, गौरव की भावना रखकर खुशी-खुशी उन्हें निबाहने का प्रयत्न करता है। कुटुंब के साथ सहजीवन में आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक सदस्य अपने व्यक्तिगत सुख-स्वार्थों का त्याग करने में भी प्रसन्नता अनुभव करता है। यही सहजीवन की सर्वोपरि आवश्यकता होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक सामंजस्य हेतु पंचशील के सिद्धांत

दुर्भावना के वातावरण में पंचशील के सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय जगत में भले ही सफल न हुए हों, पर पारिवारिक जगत में वे सदा सफल होते हैं। पारिवारिक पंचशील पालन करने से घर में शांति बनी रहती है।

(१) परस्पर आदर-भाव से देखना—परस्पर के दोषों को देखकर आलोचना करना अनुचित है। सभी मनुष्यों में कमजोरियाँ हैं। भूल करना भी मनुष्य का स्वभाव है। प्रत्येक व्यक्ति आपके घर का सदस्य होने के कारण उसका भी उस घर पर पूरा अधिकार है। यदि रुचि में साम्य न हो अथवा मत विभिन्नता हो तो वह निरादर का पात्र नहीं है। यह संभव नहीं है कि आपकी रुचि सबसे मिल सके।

कड़वी बात जहर से भी बुरी होती है। यदि आपकी वाणी मधुर नहीं है, तो जीवन में कटुता बढ़ती ही चली जाएगी। घर के किसी सदस्य की तीखी आलोचना करना अवश्य ही बर्दाश्त से बाहर हो सकती है। आपकी भ्रांत धारणा, चाहे वह भ्रांत न होकर सत्य ही हो तो भी, दूसरे पर तीखी चोट कर सकती है और तब वाणी का वह घाव बड़ी कठिनाई से भर सकता है। मनुष्य तलवार के घाव से नहीं घबड़ाता, वह उसे हँसते-हँसते सह लेता है, परंतु वाणी का घाव कलेजे में गहरा होता जाता है और वह जीवनभर भरने में नहीं आता।

(२) अपनी भूल स्वीकार करना—चेष्टा यह करनी चाहिए कि मतभेद की नौबत ही न आने पाए। अपनी ओर से कोई ऐसी बात मत आने दो जिससे कोई विवाद हो जाए, बल्कि दूसरी ओर से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होने वाले विवाद को भी शांतिपूर्वक निबटा देना ही बुद्धिमानी है। अपने द्वारा हुई भूल को तुरंत स्वीकार कर लीजिए। आपकी इस स्पष्टवादिता और आदर्श मनोवृत्ति का दूसरों पर अवश्य ही प्रभाव पड़ेगा। यदि आप भूल करके भी उसे स्वीकार नहीं करते तो दूसरों पर उसकी गलत प्रतिक्रिया होगी और क्षमाभाव के बजाए मन में भ्रांत धारणा बनी रहेगी।

परस्पर विरोध रहने के कारण अनबन चल रही हो, तो उस अनबन को समझौते द्वारा तय कीजिए और आगे के लिए ऐसा ढंग अपनाइए कि समस्या जटिल न होने पाएँ। अनबन का अंत यदि शीघ्र ही नहीं होता, तो वह धीरे-धीरे भीषण रूप धारण कर लेती है और फिर उसका समाधान बहुत कठिन हो जाता है।

(३) आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना—सभी के विचार पृथक-पृथक हो सकते हैं। यदि आपके परिवार के किसी सदस्य के विचार आप से नहीं मिलते और वह अपनी विचारधारा के अनुसार कार्य करता है, तो उसके मार्ग में रुकावट न डालिए। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आप राम के उपासक हैं और आपका पुत्र शिव की उपासना करता है, वह राम को नहीं मानता, तो उसे अपने मन के अनुसार करने दीजिए। आप किसी एक राजनैतिक दल से संबद्ध हैं और आपका पुत्र किसी अन्य राजनैतिक दल का सदस्य हो जाता है, तो उसके इच्छित कार्य से रुष्ट मत होइए। यदि आप उसके विचारों के प्रति अपना दृष्टिकोण उदार रखेंगे, तो किसी प्रकार के गृह-कलह की संभावना न रहेगी।

(४) भेद-भाव न रखना—घर में भेद-भाव भी कलह का कारण बन जाता है। आपके दो पुत्र हैं—एक को अच्छा भोजन, वस्त्र देते हैं और दूसरे को वैसा नहीं देते, तो यह भेद अवश्य ही खटकने वाला होगा। हाँ, परिस्थितिवश एक को एक प्रकार की सुख-सुविधा और दूसरे को दूसरे प्रकार की सुख-सुविधा देते हैं, तो वह आपका दोष नहीं होगा। फिर भी यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनमें से किसी एक को वह बात खले तो उसे ठीक करने की चेष्टा करनी चाहिए।

(५) विवादों का निष्पक्ष निबटारा—किसी मामले में आपको मध्यस्थ बनाया जाए, तो आप एकदम सत्यता पर आ जाइए। कोई कितना ही प्रिय हो, यदि उसके द्वारा ज्यादती हुई है तो उसकी ज्यादती की घोषणा कीजिए और जिसकी हानि हुई है, उसके मन को संतोष दीजिए। यदि आप निष्पक्ष न रहे, तो आपको उसका भीषण परिणाम भुगतना पड़ेगा।

आपका सम्मान इसी में है कि आप सबके विश्वास-भाजन बनें। यदि आप सबको एक समान समझेंगे, तो परिवार के सभी सदस्य आपकी बात मानने में संतोष करेंगे। अनजाने में यदि आप से कभी कोई भूल हो भी जाएगी, तो उसका कोई ख्याल नहीं करेगा और आपकी प्रतिष्ठा ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी।

एक कहावत है कि चार बर्तन होते हैं, तो खटकते हैं। अतः घर में कभी कुछ कलह उपस्थित हो जाए, तो उसे मनुष्य स्वभाव की कमजोरी मानकर अधिक भूल मत कीजिए। झगड़ों को शांत करने का एक बहुत बड़ा नुस्खा है—त्याग। यदि आपने किंचित भी त्याग प्रदर्शित किया तो झगड़ा समाप्त होने में देर न लगेगी।

झगड़ों को युद्ध की-सी चुनौती के रूप में मत मानिए। विपक्षी का दमन करने की बात मत सोचिए। बल्कि झगड़े के कारण पर विचार कीजिए और प्रयत्न कीजिए कि वह कारण दूर हो जाए। यदि ऐसा हो सका तो झगड़ा दूर करने में आपको शीघ्र ही सफलता मिल जाएगी। गृह-कलह को समाप्त करने का यह प्रमुख सिद्धांत है। इस पर चलकर देखिए और सफलता मिले तो दूसरों को भी इसका उपदेश कीजिए। यदि आप घर में ही अपने पंचशील को सफल न बना सके, तो बाहर उसकी सफलता की आशा कैसे कर सकेंगे?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक उन्नति हेतु पंचशीलों का पालन

परिवारों में कुछ सत्प्रवृत्तियों को विकसित और प्रचलित करने के लिए भी प्रयास किया जाना चाहिए। इस तरह की सत्प्रवृत्तियाँ पाँच प्रमुख हैं, जिन्हें पंचशील कहा गया है। भगवान बुद्ध ने मनुष्य जाति में अनेक वर्ग किए और इन वर्गों के लिए उनके कार्यक्षेत्र के अनुरूप पाँच-पाँच अनुशासन निर्धारित किए। शासन, समाज, धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य, उपार्जन आदि विभिन्न क्षेत्रों में निर्दिष्ट मर्यादाओं का पालन ही शील है, इनकी संख्या पाँच-पाँच निर्धारित की गई है, इसलिए उन्हें पंचशील कहा गया है।

यहाँ पारिवारिक पंचशीलों को (१) सुव्यवस्था (२) नियमितता (३) सहकारिता (४) प्रगतिशीलता (५) शालीनता की पाँच सत्प्रवृत्तियों के रूप में समझा जा सकता है। इन्हें अपनाने से व्यक्ति, परिवार एवं समाज को उन विकृतियों से बचे रहने का लाभ मिलता है, जो समस्त समस्याओं और विपत्तियों के लिए उत्तरदायी हैं। इन्हें अपनाने से सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खुलता है और उज्ज्वल भविष्य के राजमार्ग पर चल पड़ने का अवसर मिलता है।

(१) सुव्यवस्था

पंचशीलों में प्रथम है—'सुव्यवस्था।' अपने आपको, अपनी क्षमताओं को, साधनों को सुनियोजित सुव्यवस्थित रखने का नाम 'सुव्यवस्था' है। असभ्य और अव्यवस्थित लोग न तो उपलब्ध साधनों का ही सदुपयोग कर पाते हैं और न कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्त करने योग्य मनोयोग जुटा पाते हैं। साधन और अवसर अनेक को प्राप्त होते हैं। क्षमता और कुशलता भी बहुतों में होती है, पर वे उन्हें व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप से क्रियान्वित नहीं कर पाते। फलस्वरूप उन सफलताओं से वंचित रह जाते हैं, जिन्हें वे नियमन एवं नियंत्रण की बुद्धि होने पर सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। सद्गुणों में सबसे प्रमुख व्यवस्था ही है। महान कार्यों को संपादित करने और बड़ी सफलताएँ पाने वालों में व्यवस्था बुद्धि की विशेषता ही उन्हें श्रेयाधिकारी बनाती है। इसी के अभाव में पिछड़ापन लदा रहता है और पग-पग पर ठोकरें खानी पड़ती हैं।

वस्तुओं का सुंदर-सुसज्जित ढंग से यथाक्रम रखना, साथियों को उपयुक्त कामों में क्रमबद्ध रूप से लगाए रहना, साधनों को सँभालना और उन्हें उचित समय पर उचित कार्य में, उचित मात्रा में प्रयुक्त करना, उपार्जन और व्यय का संतुलन बिठाए रहना जैसे कौशल व्यवस्था बुद्धि के अंतर्गत ही आते हैं। आज की स्थिति और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार की नीति अपनाना, जिसमें कठिनाइयों से बचा जा सके और प्रगतिक्रम विधिवत चलता रहे, दूरदर्शी सूझ-बूझ का काम है। इस सद्गुण को हर व्यक्ति के जीवनक्रम में समाविष्ट करने के लिए हर परिवार में आरंभिक प्रशिक्षण और उनके परिपोषण का प्रबंध रहना चाहिए। स्मरण रखा जाए कि संसार में सबसे बड़ा पद 'व्यवस्थापक' का है। यह कार्य घर-परिवार में वस्तुओं को स्वच्छ और सुव्यवस्थित रखने के माध्यम से आरंभ किया जा सकता है।

वस्तुओं की सुव्यवस्था का ही दूसरा नाम 'स्वच्छता' है जो वस्तुओं को देखने में सुंदर, सुसज्जित और नयनाभिराम बनाती है। इस प्रकार रखी हुई वस्तुएँ अपनी मौन भाषा में यह प्रकट करती हैं कि हम किन्हीं सभ्य सुसंस्कृत हाथों की छत्रछाया में रह रही हैं। यह प्रतिष्ठा और गौरव की स्थिति है। जहाँ वस्तुएँ अस्त-व्यस्त,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैली-कुचैली, फटी-टूटी स्थिति में पड़ी हुई हों, तो समझना चाहिए वहाँ आलस्य और प्रमाद का साम्राज्य है। कुरूपता और अस्वच्छता एक ही बात है। 'सत्यं, शिवम्, सुंदरम्' की प्राप्ति में प्रथम सौंदर्य, द्वितीय श्रेष्ठ और अंत में सत्य की प्राप्ति का क्रम है। प्राकृतिक सौंदर्य स्रष्टा का विधान है। मनुष्य दूसरा स्रष्टा है, वह वस्तुओं को स्वच्छ और सुव्यवस्थित रखकर उन्हें सुंदर बनाए रहता है। सुसज्जा प्रकारांतर से स्वच्छता और व्यवस्था का ही सम्मिलित स्वरूप है।

(२) नियमितता

श्रम और समय के समन्वय को नियमितता कहा गया है। समय ही जीवन है। उसका एक-एक पल हीरे-मोतियों से तोलने योग्य है। एक क्षण भी बेकार नहीं गँवाना चाहिए। ईश्वर प्रदत्त दिव्य-संपदा 'समय' ही है। उसके मूल्य पर हर स्तर की विभूतियाँ एवं सफलताएँ प्राप्त हो सकती हैं। समय गँवाना अर्थात जीवन के ऐश्वर्य एवं आनंद को बरबाद करना। परिवार की परंपरा में इस आदर्श का सावधानी के साथ समावेश होना चाहिए कि कोई भी व्यर्थ समय न गँवाए। इसे श्रम के साथ जोड़े रहें। श्रम से जी चुराना, व्यर्थ के कामों में समय गुजारना, परिश्रम में असम्मान अनुभव करना, ऐसे दुर्गुण हैं जिनके रहते पिछड़ेपन से, दरिद्रता से छुटकारा नहीं पाया जा सकता है। शारीरिक आलस्य और मानसिक प्रमाद यही दो सबसे बड़े शत्रु हैं, जिन्हें प्रश्रय देने वाला दुर्भाग्यग्रस्त रहता और दुर्गति के गर्त में गिरता है।

श्रमशीलता मनुष्य की उच्चस्तरीय सत्प्रवृत्ति है। काम को ईश्वर की पूजा माना जाए। श्रम में सम्मान अनुभव किया जाए। श्रम में शरीर घिसता नहीं, वरन परिपुष्ट होता है। अपने कार्यों का स्तर एवं स्वरूप प्रशंसनीय बनाए रहने में मनुष्य की प्रतिष्ठा है। स्फूर्तिवान मनुष्य दीर्घजीवी होते हैं। परिश्रमी के पास दरिद्रता नहीं फटकती और न दुर्गुणों को अपनाने, दुर्व्यसनों से ग्रसित होने का अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलता है। समृद्धि, प्रगति और सफलता की सिद्धियाँ साधना से ही उपलब्ध होती है। जो समय की बरबादी को बचा सके और उसे अभीष्ट दिशा में क्रमबद्ध रूप से लगाए रहे, सफलताओं ने उन्हीं का चरण चूमा है। आलसी और प्रमादी, कामचोर, हरामखोर और समय गँवाने वाले ऐसे अभागे हैं जो अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारते और आत्मप्रताड़ना, लोकभर्त्सना का त्रास सहते हैं। भविष्य तो उनका अंधकारमय रहता ही है।

परिवार की परंपरा यह रहनी चाहिए कि हर सदस्य अपनी दिनचर्या बनाए। परिश्रम में जुटा रहे। बीच-बीच में जितना विश्राम नितांत आवश्यक है, उतना ही ले। मंदगति से काम न करे। प्रमादवश कामों को अधूरा न छोड़ें। समाप्त करने या बीच में रोकने के समय वस्तुओं को बिखरा न पड़ा रहने दें। जो भी काम हाथ में हो, उसे पूरे मनोयोग एवं परिश्रम के साथ, प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर संपन्न करें। श्रमशील रहने और समय का सदुपयोग करने का महत्त्व जिसने जान लिया और दिनचर्या बनाकर योजनाबद्ध रूप से काम करने का अभ्यास कर लिया, समझना चाहिए कि उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने की कुंजी उसके हाथ आ गई।

व्यस्त रहने का स्वभाव बनाना ही चाहिए। हर काम समय पर और क्रमबद्ध रूप में होना चाहिए। इस आवश्यकता को परिवार के सभी लोग अनुभव करें। उसके लिए सफल मनुष्यों की दिनचर्या का समय-समय पर उल्लेख करते रहना चाहिए। हर काम का समय निर्धारित हो। सभी अपना काम नियत समय पर नियमित रूप से करें। विशिष्ट परिस्थिति में, अनिवार्य कारण होने पर ही व्यतिक्रम के अपवाद होने चाहिए। आत्मानुशासन का अभ्यास इसी प्रकार होता है कि शरीर को श्रम में और मन को उत्कृष्ट स्तर का बनाने के लिए उत्कृष्ट चिंतन में लगाए रखा जाए। जिसने समय का मूल्य समझा है, उसी ने जीवन लाभ लिया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो परिश्रमी रहा है उसी को व्यक्तित्व निखारने और सफलताएँ पाने का श्रेय मिला है।

महिलाओं के समय की बरबादी इसीलिए होती है कि उनसे संबंधित काम दूसरों के समय पर न आने के कारण अस्त-व्यस्त पड़े रहते हैं। उनका तीन-चौथाई समय इसी में नष्ट होता है। अन्यथा वे गृह कार्यों को कुछ ही घंटों में निबटा कर अन्य उपयोगी कामों में लग सकती हैं।

(३) सहकारिता

सहकारिता प्रगति का मूलमंत्र है। जहाँ भी वह सत्प्रवृत्ति जितनी मात्रा में अपनाई जाएगी, वहाँ उसी अनुपात में सद्भावना की वृद्धि होगी, घनिष्टता बढ़ेगी। मिलजुलकर काम करने से काम का आनंद भी बढ़ता है और स्तर भी। अधिक सुयोग्यों से सीखने और कम योग्यों को सिखाने का अवसर तभी मिलता है, जब साथ-साथ काम करने की आदत डाली जाए।

अधिक योग्यों को कम योग्यों की ज्ञानवृद्धि एवं प्रगति में स्थिति के अनुरूप सहायता करने का ध्यान रखना चाहिए। अधिक पढ़े, कम पढ़ों को पढ़ाया करें। छोटी आयु के, बड़ों के कामों में हाथ बँटाया करें। एकाकीपन दूर किया जाए। रिजर्व नेचर के अपने तक सीमित रहने वाले व्यक्ति या तो स्वार्थी बन जाते हैं या आत्महीनता की ग्रंथि से ग्रसित होकर अनगढ़, असामाजिक रह जाते हैं। अस्तु परिवार व्यवस्था के हर कार्य में सहकारी प्रयत्नों को यथासंभव अधिकाधिक स्थान दिया जाना चाहिए।

(४) प्रगतिशीलता

भौतिक दृष्टि से आगे बढ़ने और आत्मिक दृष्टि से ऊँचे उठने की प्रक्रिया को प्रगतिशीलता कहते हैं। मात्र महत्त्वाकांक्षाएँ गढ़ते रहने से कोई कुछ नहीं बनता। परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ऊँची उड़ानें उड़ते रहने वाले, योग्यता एवं साधनों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभाव में कुछ कर नहीं पाते। अतृप्त महत्त्वाकांक्षाएँ खीझ और निराशा ही पैदा करती हैं। अस्तु हवाई उड़ानें उड़ने से रोकना और प्रगति के लिए आवश्यक योग्यता बढ़ाने में ही हर परिजन को मन:स्थिति नियोजित करनी चाहिए। सफलताओं की लालसा तभी सार्थक है, जब उसके उपयुक्त परिस्थिति उत्पन्न करने के लिए प्रबल प्रयास किया जाए। इसके लिए योग्यता बढ़ाना भी आवश्यक है अन्यथा अक्षमता के रहते, मात्र परिश्रम से भी कुछ बड़ा प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

इस संदर्भ में परिवार के सदस्यों को सुशिक्षित बनाने के लिए अध्ययन का, बलिष्ठ बनाने के लिए व्यायाम का, कुछ कमाने के लिए गृह-उद्योगों का, शिल्प-कौशलों का, गायन-वादन का चस्का लगाया जाए और उसके लिए साधन जुटाए जाएँ। वर्तमान स्थिति में अगले दिनों अधिक सुयोग्य बनाने के लिए अवसर मिल सके, इसके लिए जहाँ जो संभव हो, किया जाना चाहिए। संपदा की ललक कभी-कभी इतनी आतुर हो जाती है कि वह योग्यता बढ़ाने और पुरुषार्थ करने की अपेक्षा अनीतिपूर्वक संपदा-सफलता पाने के लिए मचलने लगती है। अस्तु महत्त्वाकांक्षाओं को योग्यता एवं सक्रियता बढ़ाने में नियोजित करने के लिए हर परिवार में कुछ-न-कुछ प्रयत्न चलना चाहिए। ऊँचे उठने और आगे बढ़ने के लिए कहाँ, किस प्रकार, क्या हो सकता है, इसको खोजने से उपयुक्त मार्ग निश्चित रूप से मिल जाता है।

(५) शालीनता

शिष्टता, सज्जनता, मधुरता, नम्रता आदि सद्गुणों के समुच्चय को शालीनता कहते हैं। ईमानदारी, प्रामाणिकता, नागरिकता, सामाजिकता की मर्यादाओं को निष्ठापूर्वक अपनाना शालीनता का चिह्न है। सामान्य शिष्टाचार की अपनी महत्ता है। दूसरों का सम्मान करने और अपने को विनम्र सिद्ध करने के लिए वाणी में मिठास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और व्यवहार में शिष्टता का समावेश रहना चाहिए। उदारता, सेवा, सहायता की सत्प्रवृत्ति अपनाने से ही दूसरों का स्नेह, सम्मान एवं सहयोग मिलता है। परायों को अपना बनाने की जितनी शक्ति शालीनता में है, उतनी प्रलोभन देकर फुसलाने तथा दबाव देकर विवश करने में भी नहीं है। शालीनता जन-जन के मन पर आधिपत्य की असाधारण विशेषता है। इससे घर के हर सदस्य को परिचित एवं अभ्यस्त कराया जाना चाहिए।

इन पारिवारिक पंचशीलों का किस घर में किस प्रकार अभ्यास किया जाए, इसका ऐसा नियम नहीं बन सकता, जो सब पर समान रूप से लागू हो, क्योंकि हर घर-परिवार के सदस्यों की स्थिति अलग-अलग होती है, अतः निर्धारण एवं क्रियान्वयन अवसर के अनुरूप ही किया जाना चाहिए, किंतु सिद्धांत रूप में परिजन कुछ मोटी-मोटी बातें ध्यान में रखकर चलें, तो परिजनों में वैसे सद्गुण, वह सत्प्रवृत्तियाँ निश्चित रूप से बढ़ेंगी ही। उदाहरण के लिए व्यवस्था संबंधी अभ्यास के संदर्भ में घर के बड़े सदस्यों को चाहिए कि वे छोटों को साथ लेकर चलें। स्वयं भी उस कार्य को करें और अन्य सदस्यों से भी कराएँ। स्वयं करने और दूसरों से कराने का सही तरीका यही है। दूसरों को निर्देश-परामर्श देना है तो अच्छा, पर आदतें बदलने और ढर्रे को मोड़ने में इतनेभर से अभीष्ट उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। आदर्श बदलने का तरीका एक ही है कि जो उपयुक्त है उसे क्रियात्मक रूप से अपनाने और व्यवहार में उतारने का प्रयत्न किया जाए। अभ्यास के लिए कुछ कार्यक्रम निर्धारित करने पड़ते हैं। बहुत समय तक उन्हें करते रहने से पुरानी आदतें छूट जाती हैं और नए निर्धारण स्वभाव का अंग बनकर अपने आप सामान्य जीवनक्रम का अंग बन जाते हैं।

पारिवारिक पंचशीलों में जिन पाँच सत्प्रवृत्तियों का उल्लेख है, उनको परिजनों के स्वभाव का अंग बनाने के लिए ऐसी गतिविधियों को जन्म देना पड़ेगा, जिनके सहारे उन्हें परिजनों के स्वभाव का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंग बनाया जा सके। गृह संचालकों को समय की कमी का रोना नहीं रोना चाहिए। पैसा कमाना ही मात्र एक काम नहीं है। उतनेभर से परिवार के भरणपोषण की आवश्यकता तो पूरी हो सकती है, पर संस्कारों का अभिवर्द्धन कहीं नहीं हो सकता। यदि समझ काम दे तो यह तथ्य स्वीकार करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होगी कि गुण, कर्म, स्वभाव के समन्वय से बना हुआ व्यक्तित्व ही मनुष्य की वास्तविक पूँजी है। यह वैभव जिसके पास जितनी मात्रा में होगा, वह उसी अनुपात में प्रभावशाली, संपत्तिशाली और सौभाग्यशाली बनेगा। अस्तु सच्चे अर्थों में परिजनों का हित चाहने वालों को उनके लिए साधन सुविधा जुटाने तक ही सीमित होकर न रह जाना चाहिए, वरन संस्कारों के संवर्द्धन का वह कार्य भी हाथ में लेना चाहिए, जो दूसरों से नहीं कराया जा सकता।

यदि इन पाँचों विभूतियों से घर के प्रत्येक सदस्य को अलंकृत करने का प्रयास चलता रहे, तो समय-समय पर वह उपाय भी सामने आते रहेंगे कि किसमें क्या कमी है और इस कमी को किस प्रकार पूरा किया जा सकता है ? पंचशीलों से परिवार को भरने का प्रयत्न ऐसा ही है जैसा पाँच रत्नों के भंडार से घर को भरना और कुबेर से अधिक वैभववान बनना।

गृहस्थाश्रम समाज को सुनागरिक देने की खान है। भक्त, ज्ञानी, संत, महात्मा, महापुरुष, विद्वान, पंडित, गृहस्थाश्रम से ही निकल कर आते हैं। उनके जन्म से लेकर शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण, ज्ञानवर्द्धन गृहस्थाश्रम के बीच ही होता है। परिवार के बीच ही मनुष्य की सर्वोपरि शिक्षा होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार को संपन्न ही नहीं सुसंस्कृत भी बनाएँ

धन निर्वाह की एक सर्वविदित आवश्यकता है, पर वह उतनी बड़ी नहीं है, जिसके उन्माद में प्रगति की अन्यान्य आवश्यकताओं को पूरी तरह भुला दिया जाए। समग्र विकास ही वास्तविक विकास माना जाता है। यदि शरीर का एक अंग बहुत मोटा, बहुत फूला बन जाए, तो उपलब्धि नहीं, वरन बीमारी ही कहा जाएगा। इसी प्रकार परिवार की अर्थव्यवस्था तो ठीक हो, किंतु सदस्यों का स्वास्थ्य, स्वभाव, चिंतन-चरित्र लड़खड़ाने लगे और वे दुष्प्रवृत्तियों, दुर्व्यसनों के चंगुल में फँसते जाएँ, तो समझना चाहिए कि संकटों के, विग्रहों के बादल घिरने में देर नहीं। ऐसी दशा में आर्थिक संपन्नता उन दुर्गुणों की वृद्धि में सहायक होगी। आग में तेल पड़ने की तरह वह भड़कने ही लगेगी। इससे तो वे गरीब नफे में रहते हैं, जो रोज कमाते और रोज खाते हैं। दुर्व्यसनों के लिए उनके पास न वक्त खाली रहता है और न फिजूलखरची की सुविधा।

निर्वाह साधनों की तरह स्वास्थ्य भी एक महती आवश्यकता है। उसे वास्तविक और आधारभूत संपदा माना जाना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति बहुमूल्य स्वादिष्ट व्यंजनों या पौष्टिक दवाओं के सहारे नहीं हो सकती। इस हेतु प्रकृति का अनुसरण करना पड़ेगा, इंद्रिय संयम बरतना पड़ेगा। आहार में ही नहीं, विहार में भी समग्र संयम का समावेश करना पड़ेगा। अधिकांश लोग आवश्यकता से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक मात्रा में अभक्ष्य पदार्थों का समय-कुसमय चर्वण करते रहते हैं। रसोईघर में क्या बने, किस प्रकार बने और उसे कौन कितनी मात्रा में, किस प्रकार खाए, इसकी सुव्यवस्था बना लेना घर को एक सुरक्षित किला बना लेना है। आहार, श्रम और दिनचर्या में सुव्यवस्था का नियमन एक ऐसा सिद्धांत है, जिसका ठीक तरह परिपालन करते रहने पर स्वस्थ रहने की गारंटी मिल जाती है।

अभिभावक उचित-अनुचित तरीकों से अपनी, परिवार की संपन्नता बढ़ाने में जुटे रहते हैं। इसी में वे अपना गौरव मानते हैं और वर्तमान तथा भविष्य को सुख-शांति से भरा-पूरा होने की कल्पना करते रहते हैं, पर परिणामतः होता इससे ठीक विपरीत ही है। संपदा अनावश्यक मात्रा में होने पर अपव्यय सूझता है। उसके बदले व्यसन और दुर्गुणों का पिटारा पल्ले पड़ता है। संपदा के बदले खरीदे गए दुर्गुण जीवन के साथ जोंक की तरह चिपक जाते हैं और खून पीते रहते हैं। संपन्नता विलासिता सिखाती है, आलसी, प्रमादी और अहंकारी बनाती है। इस यथार्थता को न समझ पाने वाले ही यह सोचते रहते हैं कि धन-वैभव ही सब कुछ है। उसकी बड़ी मात्रा हाथ लगने पर उसके बदले सुख-सुविधा के प्रचुर साधन जुटाए जा सकते हैं।

परिवार को सुसंपन्न बनाने के लिए जितना प्रयत्न किया जाता है, उसकी अपेक्षा उसे सुसंस्कृत, सद्गुणी बनाने का प्रयत्न किया जाए, क्योंकि यही संपदा है, जो जीवनभर साथ देती है। सद्गुणी अपनों के बीच ही नहीं परायों के बीच भी सम्मान और सहयोग प्राप्त करता है। उसके कारण व्यक्तित्व का वजन बढ़ता है। किसी भी क्षेत्र में उसका बढ़ा-चढ़ा मूल्यांकन होता है। यही वह आधार है, जिसके कारण जनसाधारण का स्नेह, सहयोग और सद्भाव पाया जाता है। जिसके पास यह उच्चस्तरीय पूँजी है, उसे निर्वाह के स्वल्प साधन रहते हुए भी आत्मसंतोष एवं लोकसम्मान की कमी नहीं रहती। जो इतना अर्जित कर सका, उसे सामान्य सुविधाओं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहते भी ऐसा अनुभव नहीं होता कि वह दरिद्र है, दूसरे सुसंपन्नों की तुलना में उन्हें कम प्रसन्नता मिल रही है।

परिवार को सुसंपन्न बनाने के व्यापक प्रचलन में हेर-फेर होना चाहिए। सोचा जाना चाहिए कि इस ललक को अतिशय मात्रा में पालने का दुष्परिणाम सामने आकर ही रहेगा। जितना निर्वाह के लिए नितांत आवश्यक है, उतना ही कमाया जाए ताकि किसी को पूर्वजों की कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने, बैठे-ठाले दिन काटने की ललक न उठे। परिवार के हर सदस्य को यह सोचने देना चाहिए कि उसे अपने पैरों पर खड़ा होना है, स्वावलंबी बनना है। सही बात भी यही है। संसार के हर प्रगतिशील को सद्गुणों की पूँजी ही आरंभ से अंत तक काम देती रही है। उसी के सहारे अपने को समर्थ, सुयोग्य, प्रामाणिक और सम्मानित बनने का अवसर मिलता रहा है। वैभव का अतिशय महत्त्व समझने-समझाने से किसी का भी हित साधन नहीं होता। दूरदर्शिता की तनिक भी कमी रही, तो उसका सदुपयोग नहीं बन पड़ता। वैभव की सनक में आमतौर से लोग व्यक्तित्व में उत्कृष्टता का समावेश करने की आवश्यकता को समझ नहीं पाते और वैभव के साथ-साथ दुर्गुणों का जखीरा जमा करते जाते हैं।

विलासिता मनुष्य को स्वप्नदर्शी बनाती है। वह वर्तमान की तरह भविष्य को भी सदा सुख-सुविधाओं से भरा-पूरा रहने की आशा करता रहता है जबकि सही बात यह है कि प्रतिकूलता की हवा बहने लगने पर वह ताश का बना काल्पनिक महल देखते-देखते धराशायी हो जाता है। तब तक समय निकल चुका होता है और नए सिरे से सद्गुणों की संपदा अर्जित कर सकना कठिन हो जाता है।

शिल्प, संगीत, साहित्य, कला-कौशल अर्जित करने के लिए जिस प्रकार दीर्घकालीन और अनवरत अभ्यास करना पड़ता है। उसी प्रकार सद्गुणों को स्वभाव का अंग बनाने के लिए, उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दैनिक जीवन में भरपूर स्थान देने के लिए प्रयत्नरत रहना पड़ता है। आदतें देर में पकती हैं। वे हथेली पर सरसों जमाने की तरह न तो तुरत-फुरत उपलब्ध होती हैं और न जमी हुई आदतों से पीछा छुड़ाना जल्दी से संभव हो पाता है। उन्हें योजनाबद्ध रूप से अपनाना और क्रमबद्ध रूप से व्यवहार में उतारना पड़ता है। परिवार के वरिष्ठों का ध्यान इसी केंद्र पर केंद्रित रहना चाहिए और उन्हें अपने परिजनों को सुसंस्कारी बनाने के लिए परिपूर्ण सतर्कता के साथ अनवरत प्रयत्न करना चाहिए। इस कार्य में अपना समय और परिश्रम लगाने में कृपणता नहीं बरतनी चाहिए।

□

परिवार के हर सदस्य में सुव्यवस्था के लिए तत्परता बरतने की आदत होनी चाहिए। छोटे कामों से घृणा न करना, सुव्यवस्था को उत्पादक मनोरंजन मानना, खाली समय का उपयोग करना, आलस्य-प्रमाद को हावी न होने देना, काम को अधूरा न छोड़ना, सुसज्जा की अभिरुचि बढ़ाना जैसे अनेक ऐसे गुण परिवार में बढ़ते हैं, जो देखने में छोटे लगते हैं, पर इस प्रवृति को पुनः प्रचलित करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार में आस्तिकता का वातावरण

संसार की शांति और सुव्यवस्था इसी बात पर निर्भर है कि मनुष्य उच्चस्तरीय भावनाओं से ओत-प्रोत रहे। यह भावनाएँ भीतर से निकलती हैं, बाहर से नहीं थोपी जा सकतीं। अंत:करण पर प्रभाव डालने की शक्ति श्रद्धा और विश्वास में ही सन्निहित रहती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि परिवार में आस्तिकता, आध्यात्मिकता, धार्मिकता का वातावरण विकसित होता रहे, उसका समुचित ध्यान रखा जाना चाहिए। ईश्वर विश्वास के साथ कर्मफल मिलने की आस्था जमती है और कुमार्ग से बचते हुए सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। चरित्र निष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य आत्मगौरव का अनुभव करे, आत्मविश्वासी बने और कर्त्तव्य पालन का महत्त्व समझे। मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने की संभावना उच्च आदर्शवादिता पर आधारित है। उसे विकसित करने के लिए हर घर में आस्तिकता का वातावरण बनाना चाहिए, इसके लिए आवश्यक है कि परिवार का हर सदस्य किसी-न-किसी रूप में ईश्वर से संपर्क साधने का अवसर प्राप्त करता रहे।

ईश्वर-उपासना से लेकर स्वाध्याय-सत्संग तक विभिन्न धार्मिक क्रिया-प्रक्रियाओं का उद्देश्य यह है कि मनुष्य चरित्रनिष्ठ और समाजनिष्ठ बने। ईमानदारी को ईश्वरभक्ति का ही एक रूप माना जा सकता है। उदार परमार्थ-परायणता की नीति अपनाने पर ही किसी को धर्मात्मा कहा जा सकता है। आस्तिकता, आध्यात्मिकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और धार्मिकता की त्रिवेणी एक ही पुण्य फल प्रदान करती है कि मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बने। ईश्वर का अवतार धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश करने के लिए होता है। आस्तिक व्यक्ति के अंत:करण में इन देवत्व समर्थक और असुर विरोधी भाव तत्त्वों के लिए समुचित स्थान होना चाहिए। परिवारों में आस्तिकता की जड़ें जमाते हुए उसके तत्त्वज्ञान और व्यवहार का स्वरूप भी समझाते रहने की आवश्यकता है। तभी इस पुण्य परंपरा का समुचित लाभ मिल सकेगा।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें सद्गुणों की जननी आस्तिकता को धैर्य और विवेकपूर्वक अपनाने का प्रयत्न करना चाहिए। ईश्वर का भय मनुष्य को नेक रास्ते पर चलाते रहने में सबसे बड़ा नियंत्रक है। राजकीय कानून या सामाजिक दंड की दुस्साहसी लोग उपेक्षा करते रहते हैं। अपराधों और अपराधियों का बाहुल्य है, पुलिस और जेल का भय भी इन्हें कम नहीं कर पाता, पर यदि किसी को ईश्वर पर पक्का विश्वास हो, अपने चारों ओर प्रत्येक प्राणी में कण-कण में ईश्वर को समाया हुआ देखे, तो उसके लिए किसी के साथ अनुचित व्यवहार कर सकना संभव नहीं हो सकता। कर्मफल की ईश्वरीय अविचल व्यवस्था पर जिसे आस्था होगी, वह अपना भविष्य अंधकारमय बनाने के लिए कुमार्ग पर बढ़ने का साहस कैसे कर सकेगा? दूसरों को ठगने या परेशान करने का अर्थ है—ईश्वर को ठगना या पेरशान करना। ऐसी भूल उससे नहीं हो सकती, जिसके मन में ईश्वर पर विश्वास, भय और कर्मफल की अनिवार्यता का निश्चय गहराई तक जमा हुआ है।

सच्चरित्रता को आस्तिकता का पर्यायवाची शब्द माना जा सकता है। ढोंग जैसी झूँठी भक्ति, जिसमें साढ़े तेईस घंटे पाप करते रहने और आधा घंटे पूजा-पत्री करके सारे पापों से छुटकारा मिलने की प्रवंचना सिखाई जाती है, उपहासास्पद हो सकती है। इसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार देवदर्शन से सकल मनोरथ सहज ही पूरे हो जाने की मान्यता भी अज्ञानता कही जा सकती है, पर सच्चे अध्यात्म का, सच्ची आस्तिकता का महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं होता। ईश्वर विश्वास का, आस्तिकता का प्रतिफल एक ही होना चाहिए—सन्मार्ग का अवलंबन और कुमार्ग का त्याग। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म और कर्त्तव्य का अनुशासन स्थापित करने के लिए ईश्वर विश्वास से बढ़कर और कोई प्रभावशाली माध्यम हो नहीं सकता।

जिसे अपने परिवार के स्त्री-बच्चों से सच्चा प्रेम हो, उसे भी यही प्रयत्न करना चाहिए कि घर के प्रत्येक सदस्य के जीवन में किसी-न-किसी प्रकार आस्तिकता का प्रवेश हो। परिवार का बच्चा-बच्चा ईश्वर विश्वासी बने। अपने परिवार के लोगों के शरीर और मन को विकसित करने के लिए जिस प्रकार भोजन और शिक्षण की व्यवस्था की जाती है, उसी प्रकार आत्मिक दृष्टि से स्वस्थ बनाने के लिए घर में बाल, वृद्ध सभी की उपासना में निष्ठा एवं अभिरुचि बनी रहनी चाहिए। इसके लिए समझाने-बुझाने का तरीका सबसे अच्छा है। गृहपति का अनुकरण भी परिवार के लोग करते हैं, इसलिए स्वयं नित्य-नियमपूर्वक नियत समय पर उपासना करने के कार्यक्रम को ठीक तरह निबाहते रहा जाए। देर तक सोना, गंदे रहना, पढ़ने में लापरवाही करना, ज्यादा खरच करना, बुरे लोगों की संगति आदि बुराइयाँ घर के किसी सदस्य में हों तो उन्हें छुड़ाने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है, क्योंकि ये बातें उनके भविष्य को अंधकारमय बनाने वाली, अहितकर सिद्ध हो सकती हैं। उसी प्रकार नास्तिकता और उपासना की उपेक्षा जैसे आध्यात्मिक दुर्गुणों को भी हटाने के लिए घर के लोगों को जरा अधिक सावधानी और सफाई से कहा सुना जाए, तो भी उसे उचित ही माना जाएगा। अपने कुटुंब की सबसे बड़ी सेवा यह हो सकती है कि प्रत्येक परिजन को आस्तिक एवं उपासक बनाया जाए। उस मार्ग को अपनाकर वे अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं। ▭

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवारों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़े

उठने-बैठने, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, नहाने-धोने, सोने-जागने और दैनंदिन काम करने की प्रवृत्ति ऐसे ही सामान्य अनुकरण से विकसित होती जाती है, किंतु भावनाएँ एवं विचार साहित्य द्वारा ही आकार ग्रहण करते हैं। सृष्टि एवं मानव जीवन के बारे में मनुष्य की धारणा साहित्य से ही बनती है।

ज्ञान अथाह है, अनंत है। हममें से कोई भी सब कुछ नहीं जान सकता। स्वाध्याय के लिए समय भी हमारे पास सीमित ही होता है। मनुष्य क्या है? जीवन क्या है? जीवन का प्रयोजन क्या है? उस प्रयोजन की प्राप्ति के मार्ग कौन-कौन से हैं? अपने लिए अधिक अनुकूल मार्ग कौन-सा हो सकता है? उस पर बढ़ते रहने की व्यवस्था किस प्रकार बनाई जा सकती है? संभावित अवरोध क्या होंगे? उनका सामना कैसे किया जाएगा? परिष्कृत व्यक्तित्व किसे कहा जा सकता है? स्वयं के व्यक्तित्व का वैसा परिष्कार कैसे किया जा सकता है? इन विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के प्रयास ही स्वाध्याय के अंतर्गत आते हैं।

व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया का मार्ग यही है कि प्रत्येक परिवार में श्रेष्ठ वातावरण के निर्माण का प्रयास किया जाए और स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित की जाए।

शिक्षित परिवारों में धार्मिकता की प्राचीन परंपराओं के प्रचलित स्वरूप की अनुपयोगिता ही सिद्ध होती रही है और जन-विवेक में भीतर-ही-भीतर उनके प्रति उपेक्षा का भाव घर कर चुका है। अतः धार्मिकता के सही स्वरूप को समझाने के लिए स्वाध्याय एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धार्मिक क्रियाओं का समन्वित स्वरूप अपनाना होगा। किशोर भी आँखें मूँदकर किसी रूढ़ि को नहीं मानना चाहता। वह इसकी उपयोगिता समझना चाहता है। आधुनिकता के नाम पर बढ़ रही उच्छृंखलता की प्रत्यक्ष आलोचना से वह आलोचक को ही प्रतिगामी और रूढ़िवादी मान सकता है। जबकि आत्मावलोकन पद्धति से स्वयं उन्हीं निष्कर्षों पर पहुँचने पर वह द्विगुणित उल्लास-उत्साह के साथ सही विचारों के प्रचार-प्रसार में जुट सकता है। आत्मावलोकन की सर्वोत्तम पद्धति स्वाध्याय ही है। अत: धार्मिकता के प्रगतिशील स्वरूप की प्रतिष्ठा के लिए उसे स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़ा जाना आवश्यक है। सत्साहित्य के पठन-पाठन की व्यवस्था एवं श्रेष्ठ परंपराओं की प्रतिष्ठा के संयुक्त प्रयास से धार्मिकता का सात्विक विकास निर्मित होकर प्रेरणा एवं प्रकाश के केंद्र का काम करता है।

प्रत्येक परिवार में स्वाध्याय की परंपरा चले। घर में यथासंभव स्वाध्याय का एक कमरा अलग रखा जाए जैसे कि पूजन कक्ष होता है। सम-सामयिक अच्छी पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही उत्कृष्ट पुस्तकें भी वहाँ अलमारी में रहें और इस कमरे तथा अलमारी की सभी पुस्तकों की स्वच्छता का पूजा-कक्ष की ही तरह ध्यान रखा जाए। समय-समय पर पुस्तकों को धूप-स्नान कराना न भूलें तथा फिनाइल की गोलियाँ उस अलमारी में रखी जाएँ, ताकि किताबों में कीड़े न लगें। जीवन निर्माण में सहायक पुस्तकें इस घरेलू लाइब्रेरी में रहें।

सत्प्रेरणा देने और सद्विचार, सद्भावनाएँ जगाने वाला साहित्य कहाँ से मिल सकता है, प्रयास करने पर इसकी जानकारी पाना कठिन नहीं। श्रेष्ठ विचार, उत्कृष्ट भावनाएँ और भव्य कल्पनाएँ अच्छी पुस्तकों में ही उपलब्ध हो सकती हैं। इसीलिए जीवन को विकास एवं प्रगति की दिशा में अग्रसर बना सकने में परिवार के सभी सदस्य समर्थ हो सकें, इस हेतु उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित की जानी चाहिए। विचारों और भावनाओं के संघर्ष में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुस्तकें ही सहायक सिद्ध होती हैं। अत: परिवार में जीवन-निर्माण की प्रेरणा भरने वाले साहित्य का होना और उसके अध्ययन की सबमें प्रवृत्ति होना आवश्यक है। अध्ययन की प्रवृत्ति नहीं हुई, तो पुस्तकों का संग्रह किस काम का? प्रत्येक परिवार में स्वाध्याय का समय नियत और नियमित रखना उत्तम है। विशेष परिस्थितियों में ऐसी नियमितता न सध पाए तो अलग बात है। साथ-साथ बैठकर महत्त्वपूर्ण एवं मार्मिक अंशों-प्रसंगों पर सहचर्चा की जा सके, तो अत्युत्तम। यों उठते-बैठते, खाते-पीते भी उन पर चर्चा होती रह सकती है। ऐसी चर्चा से एक तो परिवार के सभी सदस्यों में आत्मीयतापूर्ण संवाद की स्थिति बनी रहेगी, दूसरे सूझबूझ का विकास होगा और 'खाली दिमाग, शैतान का घर' कहावत के अनुसार, अकेलेपन की भावना एवं कुंठा से उत्पन्न दूषित चिंतन की प्रवृत्ति दूर होगी।

ज्ञान-देवता की इस उपासना के साथ ही प्रत्येक घर में भाव-देवता की नियमित उपासना भी चलनी चाहिए। तभी संतुलन सधता है।

□

आजीविका उपार्जन और सार्वजनिक सेवा के अतिरिक्त शेष समय घर पर रहते हुए ही व्यतीत करना चाहिए और उसे परिवार निर्माण में लगाना चाहिए। इस समय का क्रियात्मक उपयोग यह है कि सफाई, सुव्यवस्था एवं सुसज्जा के कार्यों में हर दिन कुछ-न-कुछ कार्य निर्धारित रखा जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नई और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष

स्कूल, कॉलेजों से निकलने वाले शिक्षित युवक-युवतियाँ, नवीन सभ्यता से प्रभावित नई पीढ़ी और पुरानी परंपरा, विचारधारा, संस्कारों से ओत-प्रोत पुरानी पीढ़ी, दोनों में एक संघर्ष एवं खींचातानी-सी आज चल रही है और परस्पर एक-दूसरे से असंतुष्ट, परेशान हैं।

नई सभ्यता में पले हुए युवक-युवतियों से वृद्धजन पुरानी पीढ़ी के लोग अपने ही जमाने की परंपराओं का अनुगमन चाहते हैं। ऐसा न करने पर वे उन्हें कोसते हैं, उल्टा-सीधा कहते हैं। नए जमाने के स्वतंत्र और आजाद तबियत के युवक-युवतियों को वृद्धजनों की यह रोकथाम बुरी लगती है। अत: वे अनुशासनहीनता, लापरवाही, उपेक्षा, अनादर का रास्ता अपनाते हैं। पुरानी और नई पीढ़ी का यह संघर्ष एक आम चीज है। पुराने जमाने में पली हुई सास तो अपने समय की मर्यादा, मान्यता, परिस्थितियों में बहुओं को कसना चाहती हैं, दूसरी ओर आजकल के स्वतंत्रता एवं समानाधिकार के वातावरण से प्रभावित आधुनिक नारी अपने जीवन के कुछ और ही स्वप्न लेकर आती है। दोनों पक्षों में परस्पर प्रतिकूलता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और इसी से संघर्ष का सूत्रपात हो जाता है।

वस्तुत: पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष नूतन और पुरातन का संघर्ष है, जो थोड़ी-बहुत मात्रा में सदैव रहता है, किंतु वर्तमान युग में अचानक भारी परिवर्तन हो जाने के कारण टकराव की परिस्थितियाँ अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बन गई हैं, जिससे संघर्ष को और भी अधिक बल मिला है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघर्ष का सरल समाधान समन्वय है। 'लें' और 'दें' की समझौतावादी नीति से क्लेश-कलहपूर्ण अनेक गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं। थोड़ा-थोड़ा दोनों झुकें, तो मिलन का एक केंद्र सहज ही मिल जाता है। नई पीढ़ी को उग्र और उच्छृंखल नहीं होना चाहिए। उसे भारतीय परंपराओं का मूल्य और महत्त्व समझना चाहिए। जिससे शिष्टता, सभ्यता और सामाजिक सुरक्षा की बहुमूल्य मर्यादाओं में रहते हुए उसे शांति व्यवस्था और प्रगति का समुचित अवसर प्राप्त होता रहे। इसके साथ-साथ पुरानी पीढ़ी को भी बच्चों के स्वभाव, चरित्र पर ही विशेष ध्यान देना चाहिए। पहनने-ओढ़ने या हँसने-खेलने में वे आधुनिक तरीके अपनाते हैं, तो उन पर इतना नियंत्रण भी नहीं करना चाहिए, जिससे वे विरोधी, विद्रोही, उपद्रवी या अवज्ञाकारी के रूप में सामने आएँ। इस विषय में थोड़ा ढील छोड़ना ही बुद्धिमानी है।

इस संघर्ष के निवारण के लिए दोनों ही पक्षों को विवेकयुक्त कदम उठाने चाहिए। जिन्होंने अपना सर्वस्व लुटाकर प्यार, दुलार के साथ नई पीढ़ी के निर्माण में योग दिया, उन वृद्धजनों को चाहे वे जरावस्थावश किसी भी हालत में हों, देवताओं की तरह सेवा-पूजा करके उन्हें संतुष्ट रखना, नई पीढ़ी का आवश्यक कर्त्तव्य है। उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना, उन्हें स्वयं कष्ट सहकर भी पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिए। ऋषियों ने 'मातृ देवो भव' 'पितृ देवो भव' 'आचार्य देवो भव' का संदेश इसी अर्थ से दिया होगा। दूसरी ओर वृद्धजनों को भी जीवन में ऐसी तैयारी करनी चाहिए जिससे वे नई पीढ़ी के लिए भार रूप होकर तिरस्कार का कारण न बनें, वरन अपने जीवन की ठोस अनुभवयुक्त शिक्षा, योग्यता से नई पीढ़ी को जीवनयात्रा का सही-सही मार्ग दिखाएँ। वानप्रस्थ और संन्यास का विधान इसीलिए रखा गया था। इसमें पुरानी पीढ़ी नई को अपने ज्ञान और अनुभवों से सद्ज्ञान की प्रेरणा देकर उन्नति एवं कल्याण की ओर अग्रसर करती रही है। घर में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़े-पड़े चारपाई तोड़ना, बेटे-बहुओं के वाक्य दंशों से पीड़ित होना, उनके स्वतंत्र जीवन में रोड़ा बनकर खटकते रहना, मोह से ग्रस्त होकर बच्चों में लिपटना, मानव जीवन की उत्कृष्ट स्थिति वृद्धावस्था का अपमान करना है। पुरानी पीढ़ी के लिए यदि अपने सदुपयोग, सम्मान, उत्कृष्टता का कोई रास्ता है तो वही है जो हमारे पूर्व मनीषियों ने सुझाया था। घर के बंधन, स्वजनों के मोह, आसक्ति, वस्तुओं के आकर्षण से मुक्त होकर वानप्रस्थ या संन्यस्त जीवन बिताना और अपने अनुभव, ज्ञान, योग्यता से जन-समाज को सही-सही रास्ता बताना, इसी में पुरानी पीढ़ी के जीवन का सदुपयोग है। अधिक मार्गदर्शन के लिए '**जीवन का उत्तरार्द्ध लोक सेवा में लगाएँ**' पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहिए।

□

परिवार में अपव्यय किसी को न करने दिया जाए। उचित आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी चाहिए, पर पैसे को उलीचने और फूँकने की आदत नहीं पड़ने देनी चाहिए। लाड़चाव में बच्चों को अपव्ययी बना देना, उन्हें भावी जीवन में दुःख-दारिद्रय भुगतने का शाप देना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योग साधना की प्रयोगशाला—
अपना घर

कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को छोड़कर साधारण श्रेणी के सभी पाठकों के लिए हम गृहस्थ योग की साधना को बहुत ही उपयुक्त, उचित, सुलभ एवं सुख-साध्य समझते हैं। गृहस्थ योग की साधना भी राजयोग, जपयोग, लययोग आदि की ही श्रेणी में आती हैं। उचित रीति से इस महान व्रत का अनुष्ठान करने पर मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। जैसे कोलतार पोत देने पर हर वस्तु काली और कलई पोत देने पर सफेद हो जाती है, उसी प्रकार योग की, साधना की, परमार्थ की, अनुष्ठान की दृष्टि रखकर कार्य करने से वे कार्य साधनामय परमार्थप्रद हो जाते हैं। अहंकार, तृष्णा, भोग, मोह आदि का भाव रखकर कार्य करने से उत्तम कार्य भी निकृष्ट परिणाम उपस्थित करने वाले होते हैं। घर गृहस्थी के संस्थान को सुव्यवस्थित रूप से चलाने में भावनाएँ यदि ऊँची, पवित्र, निःस्वार्थ और प्रेममय रखी जाएँ, तो निस्संदेह यह कार्य अतीव सात्विक एवं सद्गति प्रदान करने वाला बन सकता है। अपना आत्मा ही अपने को ऊँचा या नीचा ले जाता है। यदि आत्मनिग्रह, आत्मत्याग, आत्मोत्सर्ग के साथ अपने जीवनक्रम को चलने दिया जाए, तो इस सीधे-साधे तरीके की सहायता से ही मनुष्य परम पद को प्राप्त कर सकता है।

गृहस्थ संचालन के संबंध में भी दो दृष्टिकोण हैं। एक तो ममता, मालिकी, अहंकार और स्वार्थ का, दूसरा आत्मत्याग, सेवा, प्रेम और परमार्थ का। पहला दृष्टिकोण बंधन, पतन, पाप और नरक की ओर ले जाने वाला है। दूसरा दृष्टिकोण मुक्ति, उत्थान, पुण्य और स्वर्ग को प्रदान करता है। शास्त्रकारों ने, संत पुरुषों ने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस गृहस्थ की निंदा की है, बंधन बताया है और छोड़ देने का आदेश दिया है, वह आदेश पहले दृष्टिकोण के संबंध में है। परमार्थमय दृष्टिकोण का गृहस्थ तो अत्यंत उच्चकोटि की आध्यात्मिक साधना है। उसे तो प्राय: सभी ऋषि, मुनि, महात्मा, योगी, यती तथा देवताओं ने अपनाया है और उसकी सहायता से आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। इस मार्ग को अपनाने से उनमें से न तो किसी को बंधन में पड़ना पड़ा और न नरक को जाना पड़ा। यदि गृहस्थ बंधनकारक, नरकमय होता तो उससे पैदा होने वाले बालक पुण्यमय कैसे होते? बड़े-बड़े योगी-यती इस मार्ग को क्यों अपनाते? निश्चय ही गृहस्थ धर्म एक परम पवित्र, आत्मोन्नतिकारक, जीवन को विकसित करने वाला, धार्मिक अनुष्ठान है, एक सत समन्वित आध्यात्मिक साधना है। गृहस्थ का पालन करने वाले व्यक्ति को ऐसी हीन भावना मन में लाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है कि वह अपेक्षाकृत नीचे स्तर पर है या आत्मिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है या कमजोर है।

जीवन का परम लक्ष्य आत्मा को परमात्मा में मिला देना है। व्यक्तिगत स्वार्थ को प्रधानता न देते हुए लोकहित की भावना से काम करना, यही आध्यात्मिक साधना है। इस साधना को क्रियात्मक जीवन में लाने के लिए भिन्न-भिन्न तरीके हो सकते हैं। उन तरीकों में से एक तरीका गृहस्थ योग भी है। जीवन को उच्च, उन्नत, संस्कृत, संयमित, सात्विक, सेवामय एवं परमार्थपूर्ण बनाने की सबसे अच्छी प्रयोगशाला अपना घर ही हो सकता है। स्वाभाविक प्रेम, उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य पालन, परस्पर अवलंबन, आश्रय, स्थान, स्थिर क्षेत्र, लोक-लाज आदि अनेक कारणों से यह क्षेत्र ऐसा सुविधाजनक हो जाता है कि आत्मत्याग और सेवामय दृष्टिकोण के साथ काम करना इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है।

गृहस्थ योग के साधक के मन में यह विचारधारा चलती रहनी चाहिए कि—"यह परिवार मेरा साधना क्षेत्र है। इस वाटिका को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब प्रकार सुंदर, सुरभित और पल्लवित बनाने के लिए सच्चे हृदय से सदा शक्तिभर प्रयत्न करते रहना मेरा कर्मकांड है। भगवान ने जिस वाटिका को सींचने का भार मुझे दिया है, उसे ठीक तरह सींचते रहना मेरी ईश्वर परायणता है। घर का कोई भी सदस्य ऐसा हीन दरजे का नहीं है जिसे मैं तुच्छ समझूँ, उपेक्षा करूँ या सेवा से जी चुराऊँ। मैं मालिक, नेता, मुखिया या कमाऊ होने का अहंकार नहीं करता, यह मेरा आत्मनिग्रह है। हर एक सदस्य के विकास में अपनी सेवाएँ लगाते रहना मेरा परमार्थ है। बदले की जरा-सी भी इच्छा न रखकर विशुद्ध कर्त्तव्य भाव से सेवा में तत्पर रहना मेरा आत्मत्याग है। अपनी सुख-सुविधाओं की परवाह न करते हुए, औरों की सुख-सुविधा बढ़ाने का प्रयत्न करना मेरा तप है। घर के हर सदस्य को सद्गुणी, सत स्वभाव का, सदाचारी एवं धर्म परायण बनाकर विश्व की सुख-शांति में वृद्धि करना मेरा यज्ञ है। सबके हृदयों पर जिसका मौन उपदेश हो, अनुकरण से सुसंस्कार बनें, अपना आचरण ऐसा पवित्र एवं आदर्शमय रखना मेरा व्रत है। धर्म उपार्जित अन्न से जीवन निर्वाह करना और कराना यह मेरा संयम है। प्रेम, उदारता, सहानुभूति की भावना से ओत-प्रोत रहना और रखना, प्रसन्नता, आनंद और एकता की वृद्धि करना मेरी आराधना है। मैं अपने गृह-मंदिर में भगवान की चलती-फिरती प्रतिमाओं के प्रति अगाध भक्ति-भावना रखता हूँ। सद्गुण, सत स्वभाव और सत आचरण के दिव्य शृंगार से इन प्रतिमाओं को सुसज्जित करने का प्रयत्न ही मेरी पूजा है। मेरा साधन सच्चा है, साधना के प्रति मेरी भावना सच्ची है, अपनी आत्मा के सम्मुख मैं सच्चा हूँ। सफलता-असफलता की जरा भी परवाह न करके सच्चे निष्काम कर्मयोगी की भाँति मैं अपने प्रयत्न की सचाई में संतोष अनुभव करता हूँ। मैं सत्य हूँ, मेरी साधना सत्य है, मैंने सत्य का आश्रय ग्रहण किया है, उसे सत्यतापूर्वक निबाहने का प्रयत्न करूँगा।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपर्युक्त मंत्र हर गृहस्थ योगी को भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए। दिन में कई बार इस मंत्र को दुहराना चाहिए। एक छोटे कार्ड पर सुंदर अक्षरों में लिखकर इस मंत्र को अपने पास रख लेना चाहिए और जब भी अवकाश मिले, एक-एक शब्द का मनन करते हुए इस मंत्र को पढ़ना चाहिए। हो सके तो सुंदर अक्षरों में लिखकर सुंदर चित्र की भाँति इसे अपने कमरे में लगा लेना चाहिए। प्रातः निद्रा त्यागने पर पलंग पर पड़े-पड़े ही कई बार इस मंत्र को मन-ही-मन दोहराना चाहिए और निश्चय करना चाहिए कि आज दिनभर इन भावनाओं को अधिक-से-अधिक मात्रा में कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करूँगा। प्रातःकाल इस मंत्र को नियमित रूप से अवश्य ही दोहराना चाहिए।

"मैं गृहस्थ योगी हूँ। मेरा जीवन साधनामय है। दूसरे कैसे हैं, क्या करते हैं, क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं, इसकी मैं तनिक भी परवाह नहीं करता। अपने आप में संतुष्ट रहता हूँ, मेरी कर्त्तव्य पालन की सच्ची साधना इतनी महान है, इतनी शांतिदायनी, इतनी तृप्तिकारक है कि उसमें मेरी आत्मा आनंद में सराबोर हो जाती है। मैं अपनी आनंदमयी साधना को निरंतर जारी रखूँगा, गृह क्षेत्र में परमार्थ भावनाओं के साथ ही काम करूँगा।"

रात्रि को सोने से पूर्व दिनभर के कार्यों पर विचार करना चाहिए। (१) आज परिवार से संबंध रखने वाले क्या-क्या कार्य किए? (२) उसमें क्या भूल हुई? (३) स्वार्थ से प्रेरित होकर क्या अनुचित कार्य किया? (४) भूल के कारण क्या अनुचित काम हुआ? (५) क्या-क्या कार्य अच्छे, उचित और गृहस्थ योग की मान्यता के अनुरूप हुए? इन पाँच प्रश्नों के अनुसार दिनभर के पारिवारिक कार्यों का विभाजन करना चाहिए और आगे से त्रुटियों के सुधार का उपाय सोचना चाहिए। (१) भूल की तलाश करना, (२) उसे स्वीकार करना, (३) गलती के लिए लज्जित होना और (४) उसे सुधारने का सच्चे मन से प्रयत्न करना, यह चार बातें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसे पसंद हैं, जो इस मार्ग पर चलता है, उसकी गलतियाँ दिन-दिन कम होती जाती हैं और वह शीघ्र ही दोषों से छुटकारा पा लेता है।

गृहस्थ योग की साधना के मार्ग पर चलते हुए साधक के मार्ग में नित नई कठिनाइयाँ आती रहती हैं। साधक सोचता है, इतने दिन से प्रयत्न कर रहा हूँ, पर स्वभाव पर विजय नहीं मिलती, नित्य गलतियाँ होती हैं, ऐसी दशा में साधना चल नहीं सकती। कभी सोचता है कि हमारे घर वाले उजड्ड, मूर्ख और कृतघ्न हैं, यह लोग मुझे परेशान एवं उत्तेजित करते हैं और मेरे जीवन की साधना को नियत दिशा में नहीं चलने देते, तो साधना व्यर्थ है, इस प्रकार के निराशाजनक विचारों से प्रेरित होकर वह अपने व्रत को छोड़ देता है।

उपर्युक्त कठिनाई से हर साधक को आगाह हो जाना चाहिए। मनुष्य स्वभाव में त्रुटियाँ और कमजोरियाँ रहना निश्चित है। जिस दिन मनुष्य पूर्णरूपेण त्रुटियों से परे हो जाएगा, उसी दिन वह परम पद को प्राप्त कर लेगा, जीवन मुक्त हो जाएगा। जब तक उस मंजिल तक नहीं पहुँच जाता, जब तक मनुष्य योनि में है, देव योनि से पीछे है, तब तक यही मानना पड़ेगा कि मनुष्य त्रुटिपूर्ण है। जहाँ कई ऐसे व्यक्तियों का सम्मिलन है जिसमें कोई तो आत्मिक भूमिका में बहुत आगे, कोई बहुत पीछे है, ऐसे क्षेत्र में नित नई त्रुटियों का कठिनाइयों का सामने आना स्वाभाविक है। इन में से कुछ अपनी गलती के कारण उत्पन्न हुई होंगी, कुछ अन्यों की गलती से। यह क्रम धीरे-धीरे दूर तो होता जाता है, पर यह कठिन है कि अपना परिवार पूर्णरूपेण देव परिवार हो जाए, इसके लिए बहुत कठिनाई से डरने-घबराने या विचलित होने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। साधना का अर्थ ही "त्रुटियों के सुधार का अभ्यास" है। अभ्यास को निरंतर जारी रखना चाहिए। योगीजन नित्य प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि की साधना करते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, क्योंकि उनकी मनोभूमि अभी दोषपूर्ण है। जिस दिन उनके दोष सर्वथा समाप्त हो जाएँगे, उसी दिन, उसी क्षण वे ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त कर लेंगे। दोषों का सर्वथा अभाव, यह अंतिम सीढ़ी का, सिद्ध अवस्था का लक्षण है। यहाँ तक पहुँच जाने पर तो कुछ करना ही बाकी नहीं रह जाता। साधकों को यह आशा न करनी चाहिए कि थोड़े ही समय में इच्छित भावनाएँ पूर्ण रूप से क्रिया में आ जाएँगी। विचार क्षणभर में बन जाता है, पर उसे संस्कार का रूप धारण करने में बहुत समय लगता है, हथेली पर सरसों नहीं जमती। पत्थर पर निशान करने के लिए रस्सी की रगड़ बहुत समय तक जारी रहनी चाहिए। स्मरण रखिए दोषों से सर्वथा मुक्ति-लक्ष्य है, ध्येय है, सिद्ध अवस्था है। साधक का आरंभिक लक्षण यह नहीं है। आम का पौधा उगते ही यदि मीठे आम तोड़ने के लिए उसके पत्तों को टटोलेंगे तो मनोकामना पूर्ण न होगी।

गृहस्थ योग की अपनी साधना आरंभ करते हुए आप इस बात के लिए कमर कस कर तैयार हो जाइए कि भूलों, त्रुटियों, कठिनाइयों और असफलताओं का आपको नित्य सामना करना पड़ेगा, नित्य उनसे लड़ना पड़ेगा, नित्य उनका संशोधन और परिमार्जन करना होगा और अंत में एक-न-एक दिन सारी कठिनाइयों को परास्त कर देना होगा।

पूर्णरूपेण सुधार हुआ है या नहीं, यह देखने की अपेक्षा यह देखना चाहिए कि पहले की अपेक्षा सात्विकता में कुछ वृद्धि हुई है या नहीं? यदि थोड़ी बहुत भी बढ़ोत्तरी हुई हो तो यह आशा, उत्साह, प्रसन्नता और सफलता की बात है। बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है, कन-कन जोड़ने से मन जमा हो जाता है, राई-राई इकट्ठा करने से पर्वत बन जाता है, यदि प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी सफलता भी मिले तो हमारे शेष जीवन के असंख्य दिनों में वह सफलता बड़ी भारी मात्रा में जमा हो सकती है। यह संपत्ति किसी प्रकार नष्ट नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होती है। यह जमा होने का क्रम अगले जन्म में भी जारी रहेगा और लक्ष्य तक एक-न-एक दिन पहुँच ही जाया जाएगा। धीरे-धीरे सफलता मिले तो अधिक उत्साह से काम करना चाहिए। निराश होकर साधना छोड़ बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है।

आप जब आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी भूलों को देखें, तो देखकर निराश न हों, वरन इस भावना को मनःक्षेत्र में स्थान दें—"वीर योद्धा की तरह में जीवन युद्ध में रत हूँ। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करते समय के जो बुरे संस्कार अभी लगे हुए शेष रह गए हैं, वे बार-बार मार्ग में विघ्न उपस्थित करते हैं। कभी मैं गलती कर बैठता हूँ, कभी दूसरे गलती कर देते हैं, आए दिन ऐसे विघ्न सामने आते रहते हैं, परंतु मैं उससे जरा भी विचलित नहीं होता। मैं नित्य इन कठिनाइयों से लड़ूँगा। ठोकर या चोट खाकर भी चुप न बैठूँगा। गिर पड़ने पर फिर उठूँगा और धूलि झाड़कर फिर युद्ध करूँगा। लड़ने वाला ही गिरता और घायल होता है, कुसंस्कार यदि मुझे गिरा देते हैं तो भी मुझे उनके विरुद्ध युद्ध जारी ही रखना चाहिए। मैं नित्य मार्ग का पथिक हूँ, सच्चिदानंद आत्मा हूँ, अपने और दूसरों के कुसंस्कारों से निरंतर युद्ध जारी रखना और उन्हें परास्त कर देने तक दम न लेना ही मेरा कर्त्तव्य है। मैं अपने संकल्प, व्रत, साधन और उद्देश्य के प्रति सच्चा हूँ। अपनी सचाई की रक्षा करूँगा और इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके रहूँगा। भूलों को नित्य परखने, पकड़ने और उन्हें हटाने का कार्य मैं सदा उत्साह के साथ जारी रखूँगा।"

उपर्युक्त मंत्र को सफलता के निरीक्षण के साथ मनन करना चाहिए। इससे निराशा नहीं आने पाती। गृहस्थ योग के मूलभूत सिद्धांतों का बीज मंत्र, दृढ़ता का संकल्प और त्रुटियों से धर्म युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा, यह तीनों ही महामंत्र साधक की मनोभूमि में खूब गूँजने चाहिए। अधिक-से-अधिक समय इन विचारधाराओं में ओत-प्रोत रहना चाहिए। ▭

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदर्श परिवार की स्वस्थ परंपराएँ

(१) परिवार के आर्थिक बजट में सभी सदस्यों की भागीदारी रहे। आय-व्यय का हिसाब पारदर्शी रहे।

(२) परिवार के सदस्य दूसरों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने में पूरी रुचि लें।

(३) सब सदस्य अपने-अपने कार्यों में ही व्यस्त न रहें। कुछ समय परिवार के दूसरे सदस्यों के लिए भी लगाएँ। संवादहीनता की स्थिति न आए। एक-दूसरे के हाल-चाल पूछते रहें, यथोचित सहयोग-सहायता करते रहें।

(४) सायंकाल सामूहिक प्रार्थना-आरती में सभी सदस्य अनिवार्य रूप से शामिल् हों। परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनाएँ।

(५) सामूहिक सत्संग में, कथा-कीर्तन में सभी सदस्य भाग लें। उपासना एवं स्वाध्याय सभी सदस्य अनिवार्य रूप से करें।

(६) बड़ों का सम्मान करें, छोटों को प्यार दें।

(७) अपव्यय करने, उद्दंडता बरतने की छूट किसी को न मिले। परिवार के सब सदस्य मिलकर उद्दंडता पर नियंत्रण करें।

(८) श्रम को देवता मानकर सभी श्रम करने में रुचि प्रदर्शित करें। केवल आदेश न दें, सहकारिता अपनाएँ।

(९) भोजन करने से पहले अंशदान निकालें। बड़े लोग बच्चों के हाथ से ज्ञानघट में धनराशि डलवाएँ। इस धनराशि का उपयोग ज्ञानयज्ञ में ही किया जाए।

(१०) प्रात:काल छोटे, बड़ों को प्रणाम करें। घर से बाहर विद्यालय, कार्यालय, व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि को जाएँ, तो देवमंदिर में प्रणाम करके जाएँ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org